* 19th Year
* Issue: 247
* 13.01.2026 (TUESDAY)
* ROURKELA
* R.N.I. No. ORIHIN/2006/18978
* (Pages-6)
* Price:2.00

e-paper-www.thekalingasamachar.com

दैनिक कलिंग समाचार

The kalingasamachar

प्रकाशक एवं संपादक : प्रकाश कुमार धल

Published From ODISHA, JHARKHAND & CHHATTISHGARH

सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला : हिंदू विधवा बहू को ससुर की संपत्ति से भरण पोषण का अधिकार

नई दिल्ली १२/०१ (संवाददाता): सुप्रीम कोर्ट ने हिंदू विधवा बहू के ससुर की संपज्ञि से भरण पोषण पाने के अधिकार पर महत्वपूर्ण फैसला सुनाया है। शीर्ष कोर्ट ने कहा है कि हिंदू विधवा बहू अपने ससुर की संपज्ञि से भरण पोषण पाने की अधिकारी है चाहें वह ससुर के जीवित रहते विधवा हो गई हो या फिर ससुर की मृत्यु के बाद विधवा हुई हो।

शीर्ष अदालत ने हिंदू दज्ञक एवं भरण पोषण कानून के प्रविधानों को स्पष्ट करते हुए यह फैसला दिया है। जस्टिस पंकज मिज़ल और जस्टिस एसवीएन भट्टी की पीठ ने हाई कोर्ट के फैसले के खिलाफ दाखिल विभिन्न अपीलों को खारिज करते हुए कहा कि हाई कोर्ट का फैसला बिल्कुल सही है और उसमें दखल देने की जरूरत नहीं है।

शीर्ष अदालत ने फैसले में कहा है कि हिंदू दज़क एवं भरण पोषण कानून 1956 की धारा 21 में जो आश्रितों की परिभाषा दी गई है वह एकदम स्पष्ट है। उसमें कहा गया है कि पुत्र की विधवा जो अपना भरण पोषण करने में असमर्थ है, जिसने दूसरी शादी न की हो और जो अपने पति की संपज्ञि से अथवा अपने बेटे या बेटी की संपज्ञि से भरण पोषण में असमर्थ है, वो ससुर की संपज्ञि से भरण पोषण पाने की अधिकारी है। कोर्ट ने कहा कि कानूनी प्रविधान बिल्कुल स्पष्ट है।

उसमें पुत्र की विधवा को आश्रित माना गया है, जो अपना भरण पोषण करने में असमर्थ है। कोर्ट ने कहा कि कानून की धारा 22 में आश्रितों को भरण पोषण देने की बात कही गई है। इसमें मृत हिंदू व्यक्ति की संपज्ञि का उज्ञराधिकार प्राप्त करने वालों की जिज़्मेदारी है कि वह मृतक के आश्रितों का मृतक की संपज्ञि से भरण पोषण करे।

अगर इसे साधारण शज़्दों में समझा जाए तो सभी कानूनी उज्ञराधिकारियों का दायित्व है वे मृतक के आश्रितों का भरण पोषण मृतक की संपज्ञि से प्राप्त धन से करें। कोर्ट ने कहा कि कानून की धारा 22 की उपधारा-दो कहती है कि जहां पर मृतक हिंदू का आश्रित संपज्ञि में वसीयत के जरिए या अन्य तरीके से उज्ञराधिकार प्राप्त नहीं करता है, वो आश्रित भी उन लोगों से भरण पोषण प्राप्त करने का अधिकारी है जिन्होंने संपज्ञि ली है। इसलिए मृतक की संपज्ञि का उज्ञराधिकार प्राप्त करने वाले का दायित्व है कि वह मृतक के आश्रितों का भरण पोषण करे। इस मामले में सुप्रीम कोर्ट के समक्ष विचारणीय प्रश्न था कि ज़्या ससुर की मृत्यु के बाद विधवा हुई बहू, ससुर की आश्रित मानी जाएगी और ज़्या वह ससुर की संपज्ञि से भरण पोषण पाने की अधिकारी है ।कोर्ट कहा कि मौजूदा कानून में विधवा बहू को रिश्तेदार आश्रित माना गया है। कानून में इस बात का कोई जिक्र नहीं है कि वह कब विधवा होती है। विधवा होने का समय कानून में नहीं दिया गया है।

इस मामले में अपीलकर्ताओं ने विधवा बहू को ससुर की संपज्ञि से भरण पोषण देने के हाई कोर्ट के फैसले को चुनौती देते हुए दलील दी थी कि ससुर की संपज्ञि से भरण पोषण मांग रही बहू ससुर के मरने के बाद विधवा हुई थी, इसलिए उसे ससुर की संपज्ञि से भरण पोषण पाने का अधिकार नहीं है।

उनकी दलील थी कि ससुर के जीवित रहते विधवा होने वाली बहू ही ससुर की संपज्ञि से भरण पोषण पाने का दावा कर सकती है। सुप्रीम कोर्ट ने इन दलीलों को खारिज करते हुए कहा कि कानून में सिर्फ विधवा बहू कहा गया है उसमें विधवा होने का समय नहीं दिया गया है। ऐसे में वह कब विधवा हुई, उसका कोई मतलब नहीं है। इस मामले में डॉज़्टर महेन्द्र प्रसाद की 2021 में मृत्यु हो गई थी। उनके तीन बेटे थे। रंजीत शर्मा, देवेन्दर राय और राजीव शर्मा ।आरोप है कि महेन्द्र प्रसाद ने अपनी संपज्ञि वसीयत के जरिए 2011 में अपने मृतक बेटे देवेन्दर राय के दो बेटों के नाम कर दी थी और वसीयत में देवेन्दर राय की पत्नी कंचना को वसीयत का एज़्सीज़्यूटर बनाया था। महेन्द्र प्रसाद ने अपनी संपज्ञि में से अपने बाकी दो बेटों रंजीत शर्मा और राजीव शर्मा को कोई हिस्सा नहीं दिया था। महेन्द्र प्रसाद की मृत्यु के बाद 2023 में उनके पुत्र रंजीत शर्मा की भी मृत्यु हो गई।

रंजीत शर्मा की विधवा ने हिंदू दज़क एवं भरण पोषण कानून के तहत ससुर की संपज्ञि से भरण पोषण दिलाने का दावा किया, लेकिन परिवार अदालत ने यह कहते हुए याचिका खारिज कर दी कि बहू, ससुर महेन्द्र प्रसाद के जीवित रहते, विधवा नहीं हुई थी। महेन्द्र प्रसाद की मृत्यु के समय उसका पति रंजीत शर्मा जीवित था।

परिवार अदालत से याचिका खारिज होने के बाद बहू ने हाई कोर्ट में अपील दाखिल की। हाई कोर्ट ने अपील स्वीकार करते हुए परिवार अदालत का आदेश रद कर दिया। हाई कोर्ट ने बहू को भरण पोषण देने का आदेश देते हुए कहा कि उसकी याचिका स्वीकार करने लायक है ज़्योंकि वह महेन्द्र प्रसाद के बेटे की विधवा है।

हाई कोर्ट ने परिवार अदालत से कहा था कि वह मामले की मेरिट पर विचार करके भरण पोषण की रकम तय करे। हाई कोर्ट के इस आदेश को महेन्द्र प्रसाद की संपज्ञि पर उज्ञराधिकार प्राप्त करने वाली कंचना ने सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी थी।

जनवरी तक फाइनल होगा यूरोपीय संघ और भारत फ्री ट्रेड समझौता-फ्रेडरिक मर्ज

नयी दिल्ली १२/०१ (संवाददाता): दूनिया के बदलते व्यापार परिदृश्य के बीच भारत और यूरोपीय संघ के रिश्तों को लेकर एक अहम संकेत सामने आया है। बता दें कि जर्मनी के चांसलर फ्रेडरिक मर्ज़ ने सोमवार को यह संभावना जताई है कि यूरोपीय संघ और भारत के बीच लंबे समय से चर्चा में रहा मुक्त व्यापार समझौता जनवरी के अंत तक अंतिम रूप ले सकता है, जिससे वैश्विक व्यापार समीकरणों पर दूरगामी असर पड़ सकता है। मौजूद जानकारी के अनुसार मर्ज़ ने अहमदाबाद में प्रधानमंत्री मोदी से मुलाकात के बाद पत्रकारों से बातचीत में कहा कि यदि वार्ता समय पर पूरी होती है तो यूरोपीय संघ के शीर्ष नेता भारत आकर इस समझौते पर हस्ताक्षर कर सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि यह समझौता सुनिश्चित करने की दिशा में एक बड़ा और निर्णायक कदम होगा।

गौरतलब है कि यूरोपीय संघ के अधिकारियों की ओर से इस बयान पर फिलहाल कोई औपचारिक प्रतिक्रिया नहीं आई है, लेकिन दोनों पक्षों के बीच बातचीत को लेकर सक्रियता साफ दिखाई दे रही है। वर्षों से लंबित यह व्यापार समझौता भारत और यूरोपीय संघ के लिए चीन और रूस पर निर्भरता कम करने का एक अवसर माना जा रहा है। वर्ष 2024 में भारत-यूरोपीय संघ के बीच द्विपक्षीय व्यापार लगभग 120 अरब यूरो तक पहुंच गया था, जिससे यह समूह भारत का सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार बन गया है। बताया जा रहा है कि हाल के महीनों में वार्ताओं में तेजी आई है, खासकर तब जब अमेरिका ने भारतीय उत्पादों पर शुल्क बढ़ाए और नई दिल्ली पर रूसी तेल की खरीद कम करने का दबाव बनाया है हैं। गौरतलब है कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के कार्यकाल के दौरान भारत-अमेरिका व्यापार समझौता भी संवाद टूटने के कारण पिछले वर्ष विफल हो गया था हैं। इस पृष्ठभूमि में यूरोपीय संघ-भारत समझौता, यूरोप के लिए नए व्यापारिक नेटवर्क बनाने की रणनीति का हिस्सा माना जा रहा है, जो हाल ही में दक्षिण अमेरिका के मर्कोसुर समूह के साथ हुए करार के बाद और मजबूत हुई है। वहीं गुजरात में एक अलग कार्यक्रम में भारतीय वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि यह समझौता लगभग अंतिम चरण में है और जल्द ही ठोस नतीजे सामने आ सकते हैं। सूत्रों के अनुसार यूरोपीय संघ कारों, मेडिकल उपकरणों, वाइन और स्पिरिट्स पर शुल्क में बड़ी कटौती चाहता है, जबकि भारत श्रम-प्रधान उत्पादों के लिए शुल्क-मुक्त पहुंच और अपने ऑटो व इलेज़्ट्रॉनिज़्स क्षेत्र की तेज मान्यता की मांग कर रहा है। हालांकि स्टील, कार्बन लेवी और बाजार पहुंच जैसे मुद्दों पर अभी भी कुछ मतभेद बने हुए हैं, जिन पर आगे समझौते की जरूरत बताई जा रही है। मर्ज़ की इस यात्रा के दौरान दोनों देशों ने खनिज, स्वास्थ्य और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से जुड़े समझौतों पर भी सहमति जताई है हैं। जर्मनी, जो भारत को एक उभरते बाजार के रूप में देखता है, नई दिल्ली से रूसी ऊर्जा और रक्षा उपकरणों पर निर्भरता कम करने का आग्रह भी कर रहा है हैं। मर्ज़ ने यूक्रेन युद्ध को लेकर रूस की भूमिका पर सहमति जताते हुए यह भी कहा कि भारत की स्थिति जटिल है और उस पर उंगली उठाना उचित नहीं है। गौरतलब है कि मर्ज़ ने चांसलर बनने के बाद अपनी पहली एशियाई यात्रा के लिए भारत को चुना, जो यह संकेत देता है कि यूरोपीय नेतृत्व अब चीन के बजाय भारत पर अधिक ध्यान केंद्रित कर रहा है। उन्होंने दुनिया में बढ़ते संरक्षणवाद को दुर्भाग्यपूर्ण बताया और कहा कि इससे जर्मनी और भारत दोनों को नुकसान होता है, हालांकि उन्होंने किसी देश का नाम नहीं लिया है।

इसरो की साल की पहली लॉन्चिंग असफल

श्रीहरिकोटा १२/०१ (संवाददाता):भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन यानी ढ्ढस्क्रह्र ने आज सोमवार 12 जनवरी को अंतरिक्ष के क्षेत्र में एक और बड़ी छलांग लगा दी है। इसरो ने देश के सैटेलाइट EOS-N1 अन्वेषा को पीएसएलवी-सी62 मिशन के तहत अंतरिक्ष में भेजा। इस सैटेलाइट की मदद से सीमा निगरानी, छिपे लक्ष्यों की पहचान और पर्यावरण मॉनिटरिंग में क्रांति आने की संभावना थी। जानकारी के मुताबिक, इसरो का साल 2026 का पहला सेटेलाईट लॉन्च सुबह करीब 10 बजकर 17 मिनट पर श्री हरिकोटा स्पेस पोर्ट से हुआ। हालांकि, ये मिशन थर्ड फेज के आखिरी चरण में आई तकनीकी खामी के कारण असफल रहा।

इसरो ने अपने 2026 के प्रक्षेपण कैलेंडर की शुरुआत सोमवार को 'पीएसएलवी-सी62' मिशन के साथ की। इस मिशन के तहत पृथ्वी अवलोकन उपग्रह 'ईओएस-एन1' और 14 अन्य पेलोड को अंतरिक्ष में स्थापित किया जाना था। इसरो की वाणिज्यिक शाखा 'न्यूस्पेस इंडिया लिमिटेड' (एनएसआईएल) के इस मिशन में शामिल 14 अन्य सह-यात्री उपग्रह देशी और विदेशी ग्राहकों के हैं वे सुबह 10 बजकर 17 मिनट पर श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र के प्रथम प्रक्षेपण स्थल से लॉन्च किए गए थे।

मुज़्य पेलोड ष्ठक्रष्ठह्र का श्वह्रस्-हृ1 (अन्वेषा) हाइपरस्पेज़्ट्रल अर्थ ऑज़्जर्वेशन सैटेलाइट है, जो सीमा निगरानी, छिपे लक्ष्यों की पहचान और पर्यावरण मॉनिटरिंग में क्रांति लाएगा। यह 2025 की असफलता के बाद क्कस्रु का महत्वपूर्ण कमबैक था। इसरो श्वह्रस्-हृ1 के अलावा आज 14 दूसरे पेलोड को भी अंतरिक्ष में स्थापित करने वाला था।

पहले क्कस्रु ष्ट62/ श्वह्रस्-हृ1 लॉन्च का ऑटोमेटिक सिक्वेंस जारी कर दिया गया। इसका मतलब है कि सारे पैरामीटर्स लॉन्च के माकूल हैं। इसके बाद एक बार अंतिम परीक्षण किया गया। फिर 10 बजकर 18 मिनिट और 30 सेकेंड पर लिफ़्ट ऑफ किया गया। हालांकि, थर्ड फेज के आखिरी चरण में तकनीकी खामी के कारण ये मिशन असफल रहा।

विकसित भारत युवा नेता संवाद में बोले मोदी-आपकी सफलता ही भारत की सफलता

१२/०१ (संवाददाता): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज शाम नई दिल्ली में विकसित भारत युवा नेता संवाद 2026 के समापन सत्र में भाग ले रहे हैं। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने प्रदर्शनी का भी दौरा किया और युवा नेताओं से बातचीत कर उनके नवाचारों और विचारों से अवगत हुए। वहीं, अपने संबोधन में मोदी ने कहा कि साल 1947 में जब हमारी आजादी के 100 साल होंगे, वहां तक की यात्रा भारत के लिए अहम है और यही वो समय है, जो आपके जीवन में भी सबसे महत्वपूर्ण है। आपका सामर्थ्य भारत का सामर्थ्य बनेगा, आपकी सफलता भारत की सफलता को नई ऊंचाइयां जरूर देगी। मैं आप सभी को विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग में सहभागिता के लिए बहुत बहुत बधाई देता हूं।

मोदी ने कहा कि प्रत्येक वर्ष 12 जनवरी को हम स्वामी विवेकानंद के सज़्मान में राष्ट्रीय युवा दिवस मनाते हैं, जिनका जीवन और शिक्षाएँ हमें लगातार प्रेरित करती रहती हैं। उनसे प्रेरणा लेकर ही विकसित भारत युवा नेतृत्व संवाद की स्थापना की गई थी। अल्प समय में ही यह एक महत्वपूर्ण मंच बन गया है जहाँ युवा राष्ट्र की दिशा तय करने में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद जी के विचार, आज भी हर युवा के लिए प्रेरणा हैं। हमारे जीवन का लक्ष्य ज़्या है, कैसे हम नेशन फर्स्ट की भावना से जीवन जिएं, हमारे हर प्रयास में समाज का, देश का हित हो, इस दिशा में स्वामी विवेकानंद जी का जीवन हम सब के लिए बहुत बड़ा मार्गदर्शक है, प्रेरक है। प्रधानमंत्री ने कहा कि मुझे खुशी है कि बहुत कम समय में विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग इतना बड़ा प्लेटफॉर्म बन गया है। एक ऐसा प्लेटफॉर्म, जहां देश की विकास की दिशा तय करने में युवाओं की सीधी भागीदारी होती है। करोड़ों नौजवानों का इससे जुड़ना, देश के विकास के लिए अपने विचार शेयर करना... ये अपनेआप में अभूतपूर्व है। उन्होंने कहा कि स्टार्टअप संस्कृति का उदय वैश्विक स्तर पर लगभग 50-60 वर्ष पूर्व हुआ और समय के साथ यह बड़े निगमों के प्रभुत्व वाले युग में परिवर्तित हो गई। हालांकि, इस पूरे दौर में भारत में स्टार्टअप की अवधारणा पर नगण्य ध्यान दिया गया। 2014 तक देश में 500 से भी कम स्टार्टअप थे। स्टार्टअप संस्कृति के अभाव में, सरकारी हस्तक्षेप व्यापक था, जिससे युवाओं को अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के सीमित अवसर मिले। मोदी ने कहा कि अपने युवाओं की प्रतिभा को पहचानते हुए, हमने एक नया दृष्टिकोण अपनाया। युवाओं को सशक्त बनाने पर ध्यान केंद्रित करते हुए, सरकार ने नई योजनाएं शुरू कीं, जिन्होंने भारत में स्टार्टअप क्रांति को गति प्रदान की। प्रधानमंत्री मोदी ने 'विकसित भारत यंग लीडर्स डायलॉग' में कहा कि भारत की 'जेनरेशन जेड' रचनात्मकता से भरपूर है। उन्होंने कहा कि कहा कि नवोन्मेषी विचारों, ऊर्जा और उद्देश्य के साथ युवा शक्ति राष्ट्र निर्माण में अग्रणी भूमिका निभा रही है। उन्होंने जोर देकर कहा कि मुझे अपने देश के युवाओं पर भरोसा है, आपके सामर्थ्य पर भरोसा है, इसलिए हमने एक अलग राह चुनी। हमने युवाओं को ध्यान में रखते हुए एक के बाद एक नई स्कीज़्स बनाई... यहीं से स्टार्टअप क्रांति ने भारत में असली गति पकड़ी।

भारत-चीन संबंधों में जमी बर्फ पिघली! गलवन विवाद के बाद पहली बार भाजपा और चीनी कज़्युनिस्ट पार्टी के बीच बढ़ी नजदीकियां

नयी दिल्ली १२/०१ (संवाददाता): भारत और चीन के बीच वर्षों से जारी सीमा विवाद और कड़वाहट के बाद अब कूटनीतिक संबंधों में एक नया मोड़ देखने को मिल रहा है। हाल ही में चीन की सज़ारूढ़ कज़्युनिस्ट पार्टी के एक उच्च स्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने भारत का दौरा किया और सज़ारूढ़ भारतीय जनता पार्टी के पदाधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठकें कीं। कज़्युनिस्ट पार्टी ऑफ चाइना' (सीपीसी) के एक उच्चस्तरीय प्रतिनिधिमंडल ने सोमवार को यहां भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के मुज़्यालय का दौरा किया। इस प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व सीपीसी के अंतरराष्ट्रीय विभाग की उप मंत्री सन हयान ने किया। भारतीय जनता पार्टी के विदेश मामलों के विभाग के प्रभारी विजय चौथाईवाले ने एज़्स पर जानकारी देते हुए बताया कि बैठक के दौरान भाजपा महासचिव अरुण सिंह के नेतृत्व में एक दल ने भाजपा और सीपीसी के बीच अंतर-दलीय संवाद को आगे बढ़ाने के तरीकों पर विस्तार से चर्चा की ।भारत में चीन के राजदूत शु फीहोंग भी सीपीसी प्रतिनिधिमंडल के साथ मौजूद रहे। चौथाईवाले के अनुसार, यह दौरा दोनों देशों के प्रमुख राजनीतिक दलों के बीच संचार और आपसी तालमेल बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

ऐतिहासिक रिकॉर्ड बताते हैं कि बीजेपी और सीपीसी के बीच पार्टी स्तर पर संपर्क कोई नई बात नहीं है। 2000 के दशक के उज्ञरार्ध से ही दोनों दलों के बीच रुक-रुक कर संवाद होता रहा है। इसमें बीजेपी के प्रतिनिधिमंडलों की चीन यात्राएं और भारत में होने वाली पारस्परिक बैठकें शामिल रही हैं। हालांकि, 2020 के गलवन संघर्ष के बाद यह सिलसिला लगभग थम गया था। प्रतिनिधिमंडल ने भारत की सज़ाधारी भारतीय जनता पार्टी (क्चछ्वक्क) के अधिकारियों के साथ बैठकें कीं। आज, यह विदेश मंत्रालय द्वारा की जाने वाली चीन की स्टेट-टू-स्टेट डिप्लोमेसी को पूरा करता है और बीजिंग के विदेश नीति लक्ष्यों को आगे बढ़ाने का एक हिस्सा है। यह दौरा भारत-चीन संबंधों में एक खास नरमी के बीच हुआ है, जो सालों से सीमा तनाव, जिसमें 2020 की जानलेवा गलवान घाटी झड़प भी शामिल है, के कारण तनावपूर्ण थे। अज़्टूबर 2024 में एक टर्निंग पॉइंट आया, जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने रूस के कज़ान में क्चक्रढ्ढष्टस् शिखर सज़्मेलन के मौके पर पांच साल में अपनी पहली औपचारिक द्विपक्षीय बैठक की। उस बैठक ने वास्तविक नियंत्रण रेखा (रुष्ट) के कुछ हिस्सों पर डिसएंगेजमेंट समझौतों और कई फॉलो-अप बातचीत का रास्ता साफ किया।

तब से, दोनों पक्षों ने विश्वास फिर से बनाने के लिए ठोस कदम उठाए हैं। 2025 में, कैलाश मानसरोवर यात्रा, जो कई हिंदुओं के लिए आध्यात्मिक रूप से महत्वपूर्ण यात्रा है और 2020 से निलंबित थी, फिर से शुरू हुई, और 2026 के लिए बड़े जत्थों पर चर्चा चल रही है। मुज़्य भूमि चीन और भारत के बीच सीधी उड़ान कनेज़्टिविटी फिर से शुरू हो गई है, साथ ही पर्यटकों, बिजनेस यात्रियों और अन्य लोगों के लिए वीजा जारी करना भी आसान हो गया है।

विविध समाचार

22 मिनट में ही हिल गया था पाकिस्तान, सेना प्रमुख ने बताया ऑपरेशन सिंदूर में ज़्या-ज़्या हुआ? 8 आतंकी कैंप अब भी एज़्टिव

नयी दिल्ली १२/०१ (संवाददाता): देश की सीमाओं पर दोहरी सामरिक चुनौतियों से निपटने की प्रतिबद्धता जताते हुए सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने ऑपरेशन सिंदूर जारी रहने की बात दोहराते हुए पाकिस्तान को कड़ा संदेश दिया कि सीमा पार से अगर कोई भी उकसावे की हरकत हुई तो भारत सज़्त कार्रवाई करेगा।ऑपरेशन सिंदूर के बाद भी सीमावर्ती इलाकों में पाकिस्तान द्वारा अब भी संचालित किए जा रहे आठ आतंकी कैंपों के मद्देनजर यह चेतावनी दी जहां करीब 150 आतंकवादियों के मौजूद होने का अनुमान है।साथ ही उज़्मीद जताई कि पाकिस्तान ऐसी हिमाकत नहीं करेगा ज़्योंकि उसे मालूम है कि आगे किसी तरह के दुस्साहस का भारत कैसे जवाब देगा जैसाकि ऑपरेशन सिंदूर के दौरान हुआ था जब 10 मई को भारतीय सेनाओं ने परंपरागत जमीनी सैन्य कार्रवाई की पूरी तैयारी कर ली थी।

वहीं चीन से लगी उज़्तरी सीमा के हालातों को स्थिर करार देते हुए सेना प्रमुख ने इस पर लगातार नजर रखने की जरूरत बताई और कहा कि वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर सैनिकों की तैनाती संतुलित है तथा इसमें फिलहाल कोई कमी नहीं होगी।सेना दिवस के पूर्व मंगलवार को अपनी सालाना प्रेस कॉन्फ्रेंस में सवालों का जवाब देते हुए जनरल उपेंद्र द्विवेदी ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर के 88 घंटे के ऑपरेशन सिंदूर का दूसरा निर्णायक पल 10 मई की सुबह थी जब हमें उपर से ऐसे निर्देश थे कि पाकिस्तान ने कोई दुस्साहस करने की कोशिश की तो आगे के जमीनी ऑपरेशन शुरू करने हैं जिसके लिए हमारी तीनों सेनाएं पूरी तरह तैयार थीं।

जनरल द्विवेदी ने खुलासा किया कि सीमाओं पर बड़ी संज़्या में सैनिकों की तैनाती कर भारत ने पाकिस्तान में पारंपरिक सैन्य कार्रवाई के दायरे को काफी बढ़ा दिया था।

भारतीय नौसेना के जहाजों से लेकर भारतीय वायुसेना के मूवमेंट को सेटेलाइलट के जरिए वे भांप रहे थे और उन्हें आभास हो गया कि आगे लड़ाई बढ़ी तो मुश्किल होगा। इसीलिए पाकिस्तान के डीजीओएमओ ने 10 मई की सुबह साढे नौ बजे हमारे डीजीएमओ से संपर्क

कर कहा कि लड़ाई को रोकना ही उचित होगा।पिछले साल सात मई से 10 मई के बीच ऑपरेशन सिंदूर के बाद सीमा पार से आतंकी हमले लगभग खत्म हुए हैं पर जज़्मू-कश्मीर में सुरक्षा तैनाती में कोई कमी नहीं आयी है। अंतर्राष्ट्रीय सीमा तथा एलओसी के पार आठ आतंकी कैंप अभी भी सक्रिय हैं जिनमें लगभग 150 आतंकवादी हैं।इन कैंपों में ट्रेनिंग गतिविधि जैसी कुछ सक्रियता है जिस पर हमारी पूरी नजर है और इनपुट जुटा रहे हैं। कोई दुस्साहस किया गया तो कड़ी जवाबी कार्रवाई करेंगे।जनरल द्विवेदी ने कहा कि जज़्मू और कश्मीर में पश्चिमी मोर्चे पर स्थिति संवेदनशील बनी हुई मगर पिछले साल 10 मई से पूरी तरह नियंत्रण में है और 2025 में कुल 31 आतंकवादियों मार गिराया गया जिनमें 65 प्रतिशत पाकिस्तानी मूल के थे। इसमें तीन आतंकी पहलगाम आतंकवादी हमले के गुनगहार थे जिन्हें ऑपरेशन महादेव के दौरान मारा गया।

उनके अनुसार जज़्मू-कश्मीर में स्थानीय आतंकवादियों की संज़्या अब सिंगल डिजिट में आ गई है और नई भर्ती लगभग न के बराबर है।चीन से लगी उज़्तरी सीमा के हालात को स्थिर मगर लगातार निगरानी के लिए जरूरी बताते हुए सेना प्रमुख ने कहा कि दोनों देशों के बीच शीर्ष स्तर की बातचीत, नए सिरे से संपर्क और विश्वास बहाली के उपायों से स्थिति को धीरे-धीरे सामान्य बनाने में मदद मिल रही है। रणनीतिक दृष्टि से एलएसी पर सैनिकों की तैनाती संतुलित और मजबूत बनी हुई है और क्षमता विकास तथा इंफ्रास्ट्रक्चर बेहतर बनाने का काम भी चल रहा है।21 अज़्टूबर 2024 को जो समझौता हुआ था उसे पूरा कर लिया गया है। आगे के समाधान के लिए सैन्य, कूटनीतिक तथा शीर्ष राजनयिक स्तर पर बातचीत चल रही है। उतरी सीमा से सैनिकों की तैनाती घटाने के सवाल पर जनरल द्विवेदी ने कहा कि रणनीतिक संतुलन बनाए रखने को देखते हुए अभी तैनाती में कमी की योजना नहीं है।शज़्सगाम घाटी में चीन-और पाकिस्तान के सहयोग पर उन्होंने विदेश मंत्रालय के रूख को दोहराते हुए कहा कि यह अवैध है ज़्योंकि यह हमारा क्षेत्र है।बांग्लादेश की अंतरिम सरकार की पाकिस्तान के साथ निकटता बढ़ाने की चुनौती से जुड़े सवाल पर सेना प्रमुख ने कहा कि वहां की तीनों सेनाओं के शीर्ष स्तर से हमारा निरंतर संपर्क-संवाद है और वे किसी प्रकार भारत के खिलाफ नहीं। अंतरिम सरकार चार-पांच महीने रहेगी और इसके बाद नई सरकार आएगी तो स्थिति का आकलन करेंगे।जनरल द्विवेदी ने इस दौरान सेना की सामरिक जरूरतों तथा चुनौतियों को देखते हुए आधुनिकीकरण से लेकर हथियारों की आपूर्ति में तेजी लाने, रॉकेट-मिसाइल फोर्स बनाने तथा रक्षा आत्मनिर्भरता की अपनी प्राथमिकताएं भी बताई।

अल-फलाह यूनिवर्सिटी होगी कुर्क! ईडी ले सकती है बड़ा एज़्शन, लाल किला ज़्लास्ट से जुड़ा है मामला

फरीदाबाद १२/०१ (संवाददाता): हरियाणा के फरीदाबाद स्थित अल-फलाह विश्वविद्यालय पर प्रवर्तन निदेशालय की कार्रवाई और सज़्त हो सकती है। सूत्रों के अनुसार, ईडी मनी लॉन्ड्रिंग निवारण अधिनियम के तहत विश्वविद्यालय परिसर को कुर्क करने की तैयारी कर रही है। जांच एजेंसी को आशंका है कि विश्वविद्यालय की कई इमारतों के निर्माण में अपराध से अर्जित धन का उपयोग किया गया है।

ईडी की जांच में सामने आया है कि फरीदाबाद के धौज क्षेत्र में स्थित अल-फलाह विश्वविद्यालय के भवनों के निर्माण में जिन फंड्स का इस्तेमाल हुआ, वे कथित तौर पर अवैध स्रोतों से आए हो सकते हैं। इसी आधार पर एजेंसी संपज़ि कुर्क करने की कार्रवाई पर विचार कर रही है। यदि यह कदम उठाया जाता है, तो इसे अल-फलाह विश्वविद्यालय और उससे जुड़े ट्रस्ट के लिए बड़ा झटका माना जाएगा।गौरतलब है कि अल-फलाह विश्वविद्यालय पिछले वर्ष राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में लाल किले के पास हुए कार बम विस्फोट के बाद से केंद्रीय जांच एजेंसियों की नजर में है। इस घटना के बाद सुरक्षा और विज़ीय लेन-देन से जुड़े विभिन्न पहलुओं की जांच शुरू हुई, जिसमें अल-फलाह समूह से जुड़े कुछ संदिग्ध विज़ीय लेन-देन भी सामने आए। इसके बाद ईडी ने विश्वविद्यालय और उससे संबंधित ट्रस्ट की गतिविधियों की विस्तृत जांच शुरू की।ईडी इस पहलू की भी पड़ताल कर रही है कि ज़्या विश्वविद्यालय के निर्माण और संचालन में प्रयुक्त धनराशि अवैध स्रोतों से प्राप्त की गई थी और उसे शिक्षण संस्थानों में निवेश कर वैध दिखाने की कोशिश की गई।

जांच एजेंसी का मानना है कि मामला केवल इमारतों के निर्माण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें व्यापक विज़ीय गड़बड़ियों और मनी लॉन्ड्रिंग के एक बड़े नेटवर्क की आशंका है।इस प्रकरण में अल-फलाह समूह के चेयरमैन जवाद अहमद सिद्दीकी को ईडी ने पिछले वर्ष नवंबर में गिरज़्तार किया था। उन पर मनी लॉन्ड्रिंग से जुड़े गंभीर आरोप हैं। ईडी का दावा है कि अल-फलाह ट्रस्ट द्वारा संचालित कुछ शिक्षण संस्थानों ने कथित तौर पर छात्रों के साथ धोखाधड़ी की। एजेंसी के मुताबिक, इन संस्थानों के पास शिक्षा देने के लिए आवश्यक वैध मान्यता नहीं थी, इसके बावजूद छात्रों से फीस वसूली गई। जांच में यह भी सामने आया है कि छात्रों से एकत्र की गई राशि का उपयोग कथित तौर पर अन्य गतिविधियों और संपज़ियों के निर्माण में किया गया, जो क्क्र के तहत अपराध की श्रेणी में आता है। इसी आधार पर अब विश्वविद्यालय परिसर को कुर्क करने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जा सकता है।

फिलहाल ईडी की ओर से कुर्की की तारीख या अंतिम आदेश को लेकर कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है, हालांकि सूत्रों का कहना है कि जांच लगभग अंतिम चरण में पहुंच चुकी है। यदि कुर्की की कार्रवाई होती है, तो इसका असर विश्वविद्यालय के संचालन के साथ-साथ छात्रों और कर्मचारियों पर भी पड़ सकता है। मामले को लेकर अल-फलाह विश्वविद्यालय या ट्रस्ट की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है।

पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ की तबीयत बिगड़ी, एआईएमएस में भर्ती कराया गया

१२/०१ (संवाददाता): पूर्व उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को सोमवार को अखिल भारतीय आयुर्वेद विज्ञान संस्थान (एआईएमएस) में भर्ती कराया गया, जहां पिछले सप्ताह दो बार बेहोश होने के बाद उनका एमआरआई किया जाएगा। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। 10 जनवरी को, जब वे वॉशरूम गए थे, तब उन्हें दो बार बेहोशी का दौरा पड़ा था। एक अधिकारी ने बताया कि आज वे जांच के लिए एआईएमएस गए थे, जहां डॉज़्टरों ने उन्हें जांच के लिए भर्ती करने की सलाह दी।

यह ध्यान देने योग्य है कि उपराष्ट्रपति के रूप में सार्वजनिक कार्यक्रमों में भाग लेने के दौरान जगदीप धनखड़ पहले भी कई बार बेहोश हो चुके हैं, जिनमें कच्छ का रण, उज़्राखंड, केरल और राजधानी राजधानी शामिल हैं। उन्होंने स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए 21 जुलाई को उपराष्ट्रपति पद से इस्तीफा दे दिया था। कुछ सप्ताह बाद, सितंबर में, उन्होंने उपराष्ट्रपति के आधिकारिक आवास, उपराष्ट्रपति एन्ज़्लेव को खाली कर दिया और दक्षिण दिल्ली के छतरपुर इलाके में एक निजी फार्महाउस में चले गए।छतरपुर के गदाईपुर इलाके में स्थित यह फार्महाउस आईएनएलडी नेता अभय चौटाला का है। 22 अगस्त को, धनखड़ ने आवास और शहरी मामलों के मंत्रालय के सचिव को पत्र लिखकर पूर्व उपराष्ट्रपतियों को मिलने वाले आधिकारिक आवास का अनुरोध किया।

ओवैसी हमारे देश की कौमी एकता में बहुत बड़ी बाधा हैं-मनोज तिवारी

नागपुर १२/०१ (संवाददाता): भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने एआईएमआईएम प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी पर निशाना साधते हुए कहा कि देश की कौमी एकता में ओवैसी जैसे लोग बहुत बड़ी बाधा हैं। नागपुर में मीडिया से बातचीत के दौरान भाजपा सांसद मनोज तिवारी ने कहा कि वे सपने देखते हैं कि एक दिन हिजाब पहनने वाली महिला देश की प्रधानमंत्री बनेगी। यह वही सोच है। आप हिजाब पहनने वाली महिलाओं की बात करते हैं, तो ज़्या आपकी कज़्युनिटी में कोई और महिलाएं नहीं हैं जिनके बारे में आप बात कर सकें? यही समस्या है। अगर मुस्लिम किसी का समर्थन करेंगे, तो शरजील इमाम का करेंगे। हम तो अज़्दुल कलाम जैसे लोगों को सपोर्ट करते हैं।

बीएमसी चुनाव को लेकर उन्होंने कहा कि भाजपा-महायुति गठबंधन ने लोगों का भरोसा जीता है, और कॉर्पोरेशन में भी जनता हमें जीताकर भेजेगी। लोगों के मन में यह साफ हो गया है कि अगर बिना किसी भेदभाव के कोई लोगों का भला चाहने वाला है तो वह भाजपा है। हमें पूरा भरोसा है कि नागपुर में हमारे सभी भाई-बहन और वोटर कॉर्पोरेशन में भाजपा को ही वोट देंगे। बीएमसी चुनाव और मेयर को लेकर हो रही बयानबाजी पर मनोज तिवारी ने कहा कि महाराष्ट्र में मेयर छत्रपति शिवाजी महाराज के अनुयायी होंगे, जोहरान ममदानी की तरह नहीं, जो उमर खालिद और शरजील इमाम का समर्थन करते हैं।

दिल्ली सरकार में मंत्री कपिल मिश्रा पर एफआईआर दर्ज होने पर मनोज तिवारी ने कहा कि इस देश में हम सिख गुरुओं को सबसे ऊपर मानते हैं।

भले ही हम हिंदू हैं, लेकिन हम सिख गुरुओं का बहुत सज़्मान करते हैं। आतिशी, जो 'आप' की वरिष्ठ नेता हैं, उन्होंने सिख गुरुओं के लिए ऐसे शज़्द इस्तेमाल किए जिन्हें मैं दोहरा भी नहीं सकता। आतिशी को देश के लोग माफ नहीं करेंगे। पंजाब में आम आदमी पार्टी खत्म हो जाएगी। जो उन्होंने पाप किया है, जनता सबक सिखाएगी। अयोध्या में कश्मीरी व्यक्ति के डिटेंशन को लेकर भाजपा सांसद ने कहा कि यह वही मानसिकता थी जो भगवान राम का मंदिर नहीं बनने देती है और हिंदू देवी-देवताओं का अपमान करती है।

4 दशक पहले फ़िरोजाबाद में 24 दलितों को मारा था, अब 3 दोषियों को हुई फांसी की सजा

मैनपुरी १२/०१ (संवाददाता): न्याय के लिए 44 साल के इंतजार के बाद उज़्र प्रदेश के मैनपुरी में एक विशेष डकैती अदालत ने सनसनीखेज डिहुली गांव नरसंहार मामले में तीन दोषियों को मौत की सजा सुनाईए जिसमें महिलाओं और बच्चों सहित 24 लोगों की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। जबकि एक दोषी फ़रार हैए पुलिस हिरासत में दो अन्य आज पहले अदालत में पेश हुएए और खुद को निर्दोष बताया। कथित तौर परए 18 नवंबर 1981 की दुर्भाग्यपूर्ण शाम कोए फ़िरोजाबाद के जसराना थाना क्षेत्र के अंतर्गत डिहुली गांव की एससी कॉलोनी में सशस्त्र बदमाशों के एक समूह ने धावा बोल दिया और घरों में मौजूद पुरुषोंए महिलाओं और यहां तक कि बच्चों पर गोलियां चला दीं। गोलीबारी तीन घंटे तक लगातार जारी रहीए जिसमें 23 लोग मौके पर ही मारे गए। एक अन्य पीड़ित ने फ़िरोजाबाद के अस्पताल में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया।

हत्याकांड के बाद स्थानीय निवासी लायक सिंह ने 19 नवंबर को जसराना थाने में तहरीर देकर राधेश्याम उर्फ राधेए संतोष चौहान उर्फसंतोषा, रामसेवक, रविंद्र सिंहए रामपाल सिंह, वेदराम सिंहए मिट्ठूए भूपराम, मानिक चंद, लटूरीए राम सिंह, चुन्नीलाल, होरीलाल, सोनपाल, लायक सिंह, बनवारी, जगदीश, रेवती देवी, फूल देवीए कप्तान सिंहए कमरुद्दीन, श्यामवीर, कुंवरपाल और लक्ष्मी समेत 20 से ज्यादा लोगों पर आरोप लगाया था। पुलिस ने सामूहिक हत्याकांड की जांच शुरू कर कोर्ट में चार्जशीट दाखिल की थी। जिला कोर्ट में शुरुआती सुनवाई के बाद केस प्रयागराज ट्रांसफ़र कर दिया गया था।

वहां से फ़िर केस मैनपुरी स्पेशल जज डकैती कोर्ट में ट्रांसफ़र कर दिया गयाए जहां पिछले 15 साल से केस की सुनवाई चल रही है।

लंबे समय से ममता बनर्जी का चुनाव कैंपेन मैनेज कर रही है आई-पैक-उदित राज

मुंबई १२/०१ (संवाददाता): तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) की इलेज़्शन मैनेजमेंट कंपनी 'आई-पैक' के प्रमुख प्रतीक जैन के ठिकानों पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की छापेमारी से सियासत गर्म है। इस बीच कांग्रेस नेता उदित राज ने रविवार को अपनी प्रतिक्रिया दी।

कांग्रेस नेता उदित राज ने आईएएनएस से बात करते हुए कहा, आई-पैक लंबे समय से ममता बनर्जी का चुनाव कैंपेन मैनेज कर रही है। वहां का सारा डेटा और अंदर की जानकारी ममता बनर्जी और उनकी टीम की है। यह प्राइवेट है। ज़्या वे सज़्जियां बेच रहे हैं या किराने की दुकान चला रहे हैं? नहीं। आई-पैक सिर्फ टीएमसी का काम कर रहा है। वे वहां सिर्फ टीएमसी का डेटा चुराने और परेशानी खड़ी करने गए थे। उन्होंने केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के केरल पर दिए हालिया बयान पर निशाना साधा। उदित राज ने अमित शाह पर झूठ बोलने का आरोप लगाते हुए कहा, उनकी जिंदगी झूठ और नफरत पर बनी है। केरल शिक्षा और स्वास्थ्य के मामले में बहुत आगे है। यह कुछ इंडेज़्स में कई देशों से भी बेहतर प्रदर्शन करता है। अगर भाजपा वहां सज़ा में आती है, तो केरल उज़्र प्रदेश या गुजरात जैसा राज्य बन सकता है। उदित राज ने कहा, वे जिस गुजरात मॉडल को बढ़ावा देते हैं, वह शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा में फेल हो गया है, और अगर इसे केरल में लागू किया गया, तो यह राज्य ने जो तरक्की हासिल की है, उसे नुकसान पहुंचाएगा। कांग्रेस नेता ने कहा, वे हिंदू-मुस्लिम कार्ड खेले बिना सफल नहीं हो सकते। वे अच्छी शिक्षा नहीं दे सकते।उन्होंने दो करोड़ नौकरियां देने का वादा किया था, लेकिन वह पूरा नहीं हो सका। विदेश से काला धन भी नहीं आ सकता। उन्होंने कहा, केदारनाथ में 200 किलोग्राम से ज्यादा सोना शामिल था, फिर भी जांच ज़्यों नहीं हो रही है? उज़्राखंड में मंदिर के पास करीब 220 किलोग्राम सोना था, फिर भी कोई जांच की मांग नहीं कर रहा है। ज़्योंकि चोरी उनके राज्य में हुई है,

कलिंग समाचार
THE KALINGA SAMACHAR
(A Hindi Daily News Paper)
PUBLISHED FROM ODISHA, JHARKHAND & CHATTISHGARH
FOR NEWS AND ADVERTISEMENT CONTACT
AT: QRS. NO. B/204, SECTOR-16
ROURKELA, PH. 0661-2646999
PRAKASH KUMAR DHAL (EDITOR)
E-mail: thekalingasamachar@gmail.com

विविध समाचार

दुनिया में एक ऐसा भी एयरपोर्ट है, जो आम हवाई अड्डों से बिल्कुल अलग है. यहां लग्ज़री जैसा कुछ भी नहीं है. यहां की हर एक चीज़ अतरंगी है. चलिए आपको इसके बारे में बताते हैं.

दुनिया का सबसे छोटा एयरपोर्ट

स्कैनिंग मशीन तक नहीं

एयरपोर्ट का नाम लेते ही ऐसी लग्जरी वाली फीलिंग आती है. हालांकि दुनिया में एक ऐसा भी एयरपोर्ट है, जो आम हवाई अड्डों से बिल्कुल अलग है. यहां की हर एक चीज अतरंगी है.

एक समय था, जब लोगों के लिए एक जगह से दूसरी जगह तक यात्रा करना भी एक लग्जरी होती थी. खासतौर पर अगर कोई हवाई जहाज से कहीं जाता था, तो ये शान की बात होती थी. हालांकि वक्त बदलने के साथ ही हुआ कुछ यूं कि लोगों के लिए ये सब कुछ सामान्य सा होता चला गया. हालांकि आज भी एक ऐसा एयरपोर्ट है, जो लग्जरी यात्रा तो ऑफर करता है लेकिन एयरपोर्ट पर ऐसा कुछ भी नहीं है. एयरपोर्ट का नाम लेते ही ऐसी लग्जरी वाली फीलिंग आती है. यहां चेक इन करने के बाद से ऐसी हाई क्लास सुविधाएं मिलती हैं कि इंसान का इंतजार भी एक हैप्पी ट्रिप में बदल जाता है. हालांकि दुनिया में एक ऐसा भी एयरपोर्ट है, जो आम हवाई अड्डों से बिल्कुल अलग है. यहां लग्जरी जैसा कुछ भी नहीं है. चलिए आपको इसके बारे में बताते हैं.

ये एयरपोर्ट थोड़ा अलग है

रिपोर्ट के मुताबिक कोलंबिया के अगुआचिका नाम की जगह पर हैकारिटैमा एयरपोर्ट है, जो दुनिया भर में अपने कम जगह में बने होने की वजह से मशहूर है. इस एयरपोर्ट पर सिर्फ दो वेटिंग एरिया है – एक जब आप यहां पहुंचते हैं और दूसरा जहां आपका सामान चेक होता है. यहां पर सामान चेक करने के लिए कोई स्कैनर नहीं है, बल्कि इसे मैनुअली चेक किया जाता है. दरअसल यहां स्कैनर मशीन की जगह ही नहीं है. जब लोग एयरपोर्ट पर आते हैं, तो उन्हें धूप में ही लाइन लगाकर इंतजार करना पड़ता है.

आम के पेड़ के नीचे वेटिंग एरिया

यहां पर इंतजार करने के लिए कोई आलीशान वेटिंग रूम नहीं है, बल्कि लोग आम के पेड़ के नीचे बनी बेंच पर इंतजार करते हैं. पुरुषों और महिलाओं के लिए एक-एक वेटिंग रूम है. चूंकि यहां सिर्फ 48 पैसेंजर ही होते हैं, इसलिए ये साफ-सुथरा होते हैं. प्लेन भले ही यहां पर छोटी ही हो, लेकिन सीटें काफी आरामदेह होती हैं. आपको अपना सामान डेस्टिनेशन पर लेने के लिए एक टिकट दिया जाता है, जिसे दिखाना होता है.

6 दिन बिना सांस लिए और सालभर बिना खाए जिंदा रह सकता है बिच्छू

हम सब जानते है कि हमें सांस लेने के लिए ऑक्सीजन की ज़रूरत होती है और इसके बिना ज़िंदगी संभव नहीं है. हालांकि एक जीव ऐसा भी है, जो 6 दिन बिना सांस लिए ज़िंदा रह सकता है.

दुनिया में आपने बहुत तरह के जीवों के बारे में पढ़ा और सुना होगा. हर जीव की अपनी खासियत होती है. कोई किसी चीज़ में अच्छा होता है तो कोई किसी चीज में बुरा. कई बार ऐसा भी होता है कि आप किसी खास जीव को उसकी विशेषता के बारे में जानते हैं. एक ऐसे ही दिलचस्प जीव के बारे में आज बताएंगे, जिसकी खासियत ही अलग है.

हमारी ज़िंदगी में सांस लेना कितना महत्वपूर्ण है, ये हम सभी जानते हैं. बिना सांस लिए तो हम जीने की कल्पना भी नहीं कर सकते है. हालांकि एक जीव ऐसा भी है, जो 6 दिन बिना सांस लिए ज़िंदा रह सकता है. इसको कुदरत ने बनाया ही कुछ ऐसा है कि वो अपना सांस लंबे वक्त तक रोक सकता है.

6 दिन बिना सांस लिए रह सकता है जीव

हम जिस जीव के बारे में बात कर रहे हैं, वो बिच्छू है. बिच्छू के फेफड़ों की बनावट ही कुछ ऐसी होती है कि वो लंबे वक्त तक अपनी सांस रोक सकता है. इस तरह के फेफड़ों को बुक लंग्स कहा जाता है. इनका आकार किताब के मुड़े हुए पन्नों की तरह होता है. इसीलिए उन्हें ये नाम दिया गया है. उनके फेफड़ों में अच्छी मात्रा में हवा रुक सकती है और ये सांस लेने की क्रिया के दौरान भी होता रहता है. यही वजह है कि हवा की रिजर्व मात्रा रहने की वजह से वो 6 दिन तक बिना हवा को एक्सचेंज किए हुए भी जिंदा रह सकते है.

सालभर खाने की भी नहीं जरूरत

इतना ही नहीं इस जीव के बारे में दिलचस्प बात ये भी है कि ये पूरा एक साल बिना भोजन के गुजार सकते है. वे पानी भी बहुत कम पीते हैं, लेकिन इन्हें जिंदा रहने के लिए पानी की जरूरत होती है. ये किसी भी सतरह पर आराम से चढ़ सकते हैं और जब ये किसी अल्ट्रावायलेट लाइट के नीचे पड़ते हैं, तो चमकने लगते हैं.

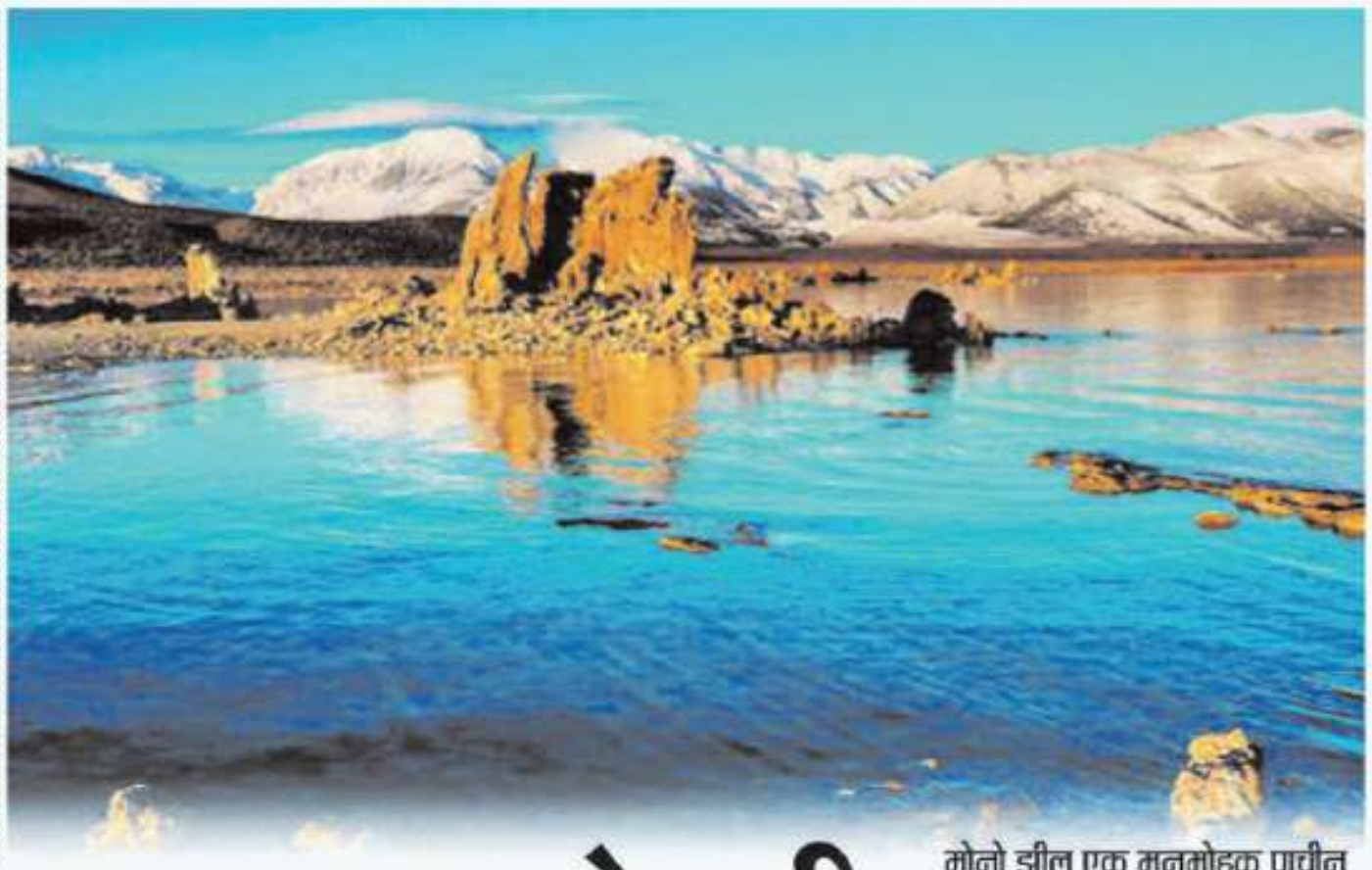

सायनाइड से भरी पड़ी है यह खारी झील

साइंटिस्ट के लिए है रहस्य

मोनो झील एक मनमोहक प्राचीन खारी झील है. इसे अनोखे जीव, वैज्ञानिक महत्व, और आश्चर्यजनक सूर्यास्त के नजारों के लिए जाना जाता है. यह पक्षी देखने वालों के लिए स्वर्ग है और कलाकारों और फ़ोटोग्राफरों के लिए प्रेरणा का स्रोत है. हाल ही में यहां एक पुरातन जीव पाया गया है.

कैलिफोर्निया के पूर्वी सिएरा नेवादा में स्थित मोनो झील वास्तव में देखने लायक है. पानी का यह अनोखा और मनमोहक पिंड दुनिया में किसी और जैसा नहीं है, जो प्रकृति प्रेमियों और फ़ोटोग्राफरों की कल्पना को समान रूप से आकर्षित करता है. इसका शानदार फिरोजा रंग, टूफा टावर्स नाम की अनोखी चूना पत्थर की संरचनाएं और क्षारीय पानी इसे देखने लायक बनाते हैं. मोनो झील एक प्राचीन खारी झील है, जिसका इतिहास दस लाख साल से भी ज्यादा पुराना है. यह उत्तरी अमेरिका की सबसे पुरानी झीलों में से एक है और इसमें नमक की मात्रा मृत सागर के समान ही अधिक है. झील का बहुत ज्यादा खारापन इसे अधिकांश मछली प्रजातियों के लिए नाकाबिल बनाती है, लेकिन यह अद्वितीय नमकीन झींगा और क्षारीय मक्खियों के लिए एक बढ़िया जगह है. मोनो झील अपने खौफनाक और मनमोहक टूफा टावरों के लिए मशहूर है. ये अनोखी कैल्शियम कार्बोनेट संरचनाएं पानी की सतह से ऊपर उठती है. जिससे एक ऐसा अद्भुत और आश्चर्यजनक नजारा बनता है जो दुनिया में किसी और से अलग है. टूफा टावर मीठे पानी के झरनों और झील के क्षारीय पानी के मिलने से बनते हैं. मोनो झील 80 से ज्यादा प्रवासी पक्षियों की प्रजातियों के लिए घोंसला बनाने की एक खास जगह है, जो इसे पक्षी देखने वालों के लिए स्वर्ग बनाती है. हर साल, हजारों पक्षी मोनो झील में आते हैं, जिनमें प्रतिष्ठित कैलिफ़ोर्निया गल, विल्सन का फलारोप और स्नोई प्लोवर शामिल हैं. यह वास्तव में पक्षी प्रेमियों का स्वर्ग है अगर मोनो झील खूबसूरत नजारों के लिए जानी जाती है, तो वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के लिए भी कम दिलचस्प नहीं है. यह एक भूवैज्ञानिक चमत्कार है, जो हैरतअंगेज पर्वत श्रृंखलाओं और ज्वालामुखीय विशेषताओं से घिरा हुआ है. यह लॉन्ग वैली काल्डेरा में स्थित है, जो एक विशाल ज्वालामुखीय गड्ढा है जो 700,000 साल पहले बना था. सूर्यास्त के समय मोनो झील पर जाना वास्तव में एक जादुई अनुभव है. लेकिन ऐसा नहीं है कि यहां सूर्योदय के समय के नजारे कम हैं.आसमान में जीवंत रंगों के प्रतिबिंब एक मनमोहक दृश्य बनाते हैं, जो टूफा टावरों के सिल्हूट से और भी अधिक सुंदर हो जाते हैं. यह एक फोटोग्राफरों का स्वर्ग है और यहां कि आपको प्रकृति की सुंदरता से विस्मित कर देता है.

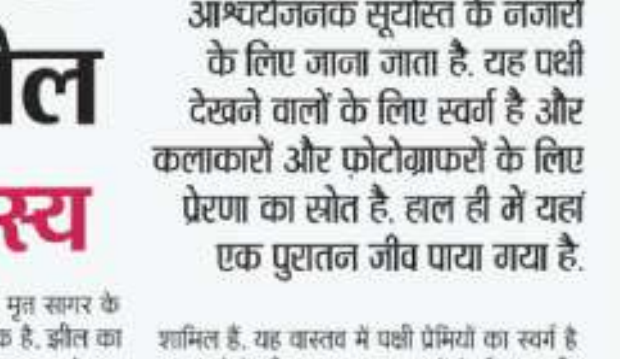

नीली जीभ से पहचानी जाती है ये बड़ी छिपकली, पाली भी जा सकती हैं

नीली जीभ वाली स्किंक देखने में खतरनाक लगती है, लेकिन हैरानी की बात ये है इस छिपकली को पाला भी जा सकता है. लेकिन इसे पालना आसान नहीं है क्योंकि इसे रखते समय सावधानी बरतनी होती है क्योंकि यह ऊंगली को भी खाना समझ कर काट सकती है.

दुनिया में कई जानवर आकार तो कुछ अपने अजीब से आकृति या रंग के लिए अजीब से लगते हैं. ऐसा ही एक जानवर है नीली जीभ वाली स्किंक. वैसे तो यह एक प्रकार की छिपकली है और दो फुट का आकार इसे अपने आप में खास बनाता है. लेकिन यह अपनी खास और अलग ही तरह की नीले रंग की जीभ से ज्यादा पहचानी जाती है. इस जीभ के कई उपयोग होते है. लेकिन इस जानवर का सबसे रोचक पहलू यही है कि इसे पाला जा सकता है. स्किंक छिपकली की प्रजाति के जानवर होते हैं. उनके पैर आम छिपकली से छोटे. औरगर्दन कम लचीली होती है. नीली जीभ के स्किंक की उम्र करीब 30 साल तक की होती है. इनकी लंबाई करीब 2 फुट तक की और भार आधा किलोग्राम तक का होता है. छिपकली जैसा शरीर तो पीले, लाल और कत्थई रंग का होता है, लेकिन अगर आप केवल मुंह देखने को आपको उनके सांप होने का धोखा हो सकता है.

अगर आपको लगता है कि नीली जीभ के स्किंक की जीभ का केवल रंग ही नीला है और इसके अलावा उसमें कुछ खास नहीं है तो आप गलत है. यह जीभ पराबैंगनी प्रकाश को परावर्तित यानी रिफ्लेक्ट कर सकती है. जो जानवर ऐसी किरणों को देख पाते हैं, उनके लिए तो इस स्किंक की जीभ बहुत ही चमकीली लगती है. यह गुण स्किंक को दूसरे शिकारियों और अन्य स्किंक प्रतियोगियों से बचाता है. नीली जीभ के स्किंक की जीभ का केवल यही उपयोग नहीं है. इसके जरिए वे अपने परिवार की अन्य छिपकलियों के बीच लंबी दूरी के संचार भी कर सकती है. इसकी वजह ये है कि इस जीभ को दूर से देखना बहुत आसान है, जो सबसे चमकीली जीभ वाले स्किंक को कई फायदे दे सकता है. इससे रक्षा करने में मदद मिलती है.

झाड़ीवाले इलाके में रहने वाले नीली जीभ के स्किंक ऑस्ट्रेलिया, न्यू गुयाना और इंडोनेशिया में अधिक पाये जाते हैं. ये फल फूल के अलावा कई तरह के पक्षी और जानवर खाते हैं. लेकिन ये छिपकर ही शिकार करते हैं और बहुत ज्यादा फुर्तीले नहीं होते हैं, बल्कि बहुत ही धीमी गति से चलने के लिए जाने जाते हैं. लेकिन ये शहरी वातावरण में खुद को ढाल लेते हैं और ट्रैफिक से बच कर रहना सीख जाते हैं. नीली जीभ के स्किंक की खास बात ये होती है कि ये अपने ही परिवार यानी भाई बहनों के साथ शारीरिक संबंध नहीं बनाते हैं. ऐसे ये करते कैसे है यह आज भी वैज्ञानिकों के लिए रहस्य है, लेकिन ये साथी चुनने में बहुत सावधानी बरतते हैं और नर एक ही मादा के साथ हमेशा रहते हैं जो इन जानवरों के साथ होना एक चौंकाने वाला गुण है. सबसे खास बात नीली जीभ के स्किंक के बारे में यही है कि उन्हें पाला जा सकता है, बल्कि पाला भी जाता है. वे शहरी वातावरण में रह सकते हैं. इनका रखरखाव आसान और सस्ता होती है. इनकी देखभाल भी तुलनात्मक तौर से आसान होती है. इन्हें हाथ से खिलाना तो आसान होता है, लेकिन कई बार ये ऊंगलियों को ही खाना समझ कर काट लेते है. ऐसे में सावधानी की जरूरत होती है.

कलिंग समाचार

संपादकीय

मंगलवार 13 जनवरी 2026

मोदी की विदेश नीति पर सवालिया निशान

नरेन्द्र मोदी सरकार जिस विदेश नीति पर चल रही है, उसके संभावित नुकसान के बारे में राहुल गांधी काफी पहले से आगाह करते रहे हैं। लेकिन कभी भी नेता प्रतिपक्ष श्री गांधी की सही सलाह को मोदी सरकार ने नहीं सुना, बल्कि भाजपा नेता उन्हें राजनीति का नौसिखिया साबित करने में लगे रहे या फिर उनके बयानों से देशविरोधी ताकतों को बल मिलता है, ये आरोप लगाते रहे। अभी डोनाल्ड ट्रंप के युद्धविराम के दावों को लेकर भी राहुल गांधी ने जो सवाल किए उसके बाद भाजपा नेताओं ने यहां तक कह दिया कि राहुल गांधी पाकिस्तान की भाषा बोल रहे हैं और उन्हें निशान-ए-पाकिस्तान से नवाज़ा जाएगा। घरेलू राजनीति में आरोप-प्रत्यारोप चलते रहते हैं, लेकिन विदेश नीति में सारे दल अब तक एकजुटता दिखाते रहे हैं, मगर अब मोदी सरकार में यह परंपरा भी टूट चुकी है। अब विदेश नीति मोदीनीति के तौर पर प्रस्तुत की जा रही है। ऑपरेशन सिंदूर को लेकर 33 देशों में भेजा गया सर्वदलीय प्रतिनिधमंडल इसकी मिसाल है। भारत के पहले भी पाकिस्तान और चीन के साथ युद्ध हुए, कभी भी भारत ने पहले हमला नहीं किया, बल्कि परिस्थितियां संभालने के लिए उसे हथियार उठाने पड़े। यह बात पूरी दुनिया में अकाट्य सत्य की तरह बनी हुई है, इसलिए इससे पहले भारत को कभी भी अपना पक्ष रखने के लिए सांसदों, राजनयिकों की टोली देश-देश नहीं भेजनी पड़ी। इस बार भी भारत ऐसा कुछ न करता तब भी दुनिया ऑपरेशन सिंदूर पर सवाल नहीं करती। क्योंकि जैसा हमेशा हुआ, अब भी वैसा ही हुआ कि सीमापार से आतंकी हमारी धरती पर आए, हमला किया, निर्दोष नागरिकों को मारा और तब जाकर भारतीय सेना ने पाकिस्तान के आतंकी अड्डों पर हमला किया। पाकिस्तान ने पलटवार करने के लिए जो कदम उठाए, भारत ने उनका भी तगड़ा जवाब दिया। अफसोस है कि पुंछ जैसे सीमाई इलाकों में निर्दोष नागरिकों की मौत हुई, लेकिन यहां सेना की नहीं सरकार की गलती थी, कि उसने पहले से नागरिक सुरक्षा के इंतजाम नहीं किए। बाकी जिन शहरों या सैन्य अड्डों को पाकिस्तान ने निशाना बनाने की कोशिश की, वो सारी हमारी रक्षा प्रणाली ने नाकाम कर दी थी। लेकिन इस बीच डोनाल्ड ट्रंप ने बीच में आकर सब गड़बड़ कर दिया। ट्रंप की मध्यस्थता से भारत युद्ध विराम के लिए सहमत हुआ यह संदेश तो पूरी दुनिया में गया ही, क्योंकि भारत ने अब तक इसका खंडन नहीं किया है। दूसरी तरफ पाकिस्तान को भी बढ़कर बोलने और खुद को पीड़ित की तरह पेश करने का मौका मिला। मोदी सरकार की विदेश नीति की यह सबसे बड़ी असफलता थी कि जिन देशों ने पहलगाम हमले के तुरंत बाद भारत के लिए सहानुभूति दिखाई, उनमें से कोई ऑपरेशन सिंदूर और उसके बाद भारत के साथ खड़ा नहीं रहा, अफगानिस्तान को छोड़कर। अब प्रधानमंत्री मोदी देश में तो खुद घूम-घूमकर ऑपरेशन सिंदूर का श्रेय लेने और उस पर राजनीति करने में लगे हैं, उधर उनका पक्ष रखने के लिए विदेशों में गया प्रतिनिधिमंडल भी भारत के पक्ष में माहौल बनाने में किस हद तक सफल होगा, यह विचारणीय है। क्योंकि इन प्रतिनिधिमंडलों की बैठकें अमूमन सामाजिक संगठनों, विचार मंचों, और वहां के प्रवासी भारतीय समुदाय से हो रही हैं, बहुत कम देशों में सरकार के साथ उच्च स्तरीय बैठक इन दलों की हुई है। जबकि विदेश नीति के मसले, किस देश को किस मुद्दे पर कितना साथ देना है, ऐसे फैसले सरकार में ऊंचे पदों पर बैठे लोग ही तय करते हैं, जो नीति निर्धारक होते हैं असल शक्ति उनके हाथों में होती है, और इन लोगों के साथ सर्वदलीय प्रतिनिधि मंडल की बैठकें हुई हैं, ऐसा देखने नहीं मिला। मेहमाननवाजी के तकाजे के हिसाब से अपने देश आए भारतीय प्रतिनिधिमंडल को हर देश स मान दे रहा है, उनकी बात सुन रहा है, आतंकवाद की निंदा भी कर रहा है, लेकिन क्या मोदी सरकार का मकसद केवल यही था। अगर ऐसा ही समर्थन जुटाना था तो फिर इन तमाम देशों में भारतीय दूतावास इस जि मेदारी को पूरा कर सकते थे। अच्छी, मनलुभावन बातें करने के लिए क्या जनता के धन पर इन प्रतिनिधिमंडलों को भेजा गया है।

अरावली के मोरमुकुट गोवर्धन पर्वत की सुरक्षा भी ज़रूरी

जस्टिस अनिल कुमार शुक्ला

विशेषज्ञ इसे दुनिया की बहुत पुरानी पर्वत श्रृंखला भी मानते हैं। इसे थार मरुस्थल के फैलाव को रोकने वाला पर्वत भी माना जाता है। यानी ईश्वर न करे, अगर कहीं यह नष्ट हो जाए तो शायद थार का रेगिस्तान इतना फैलेगा कि अभी जहां तक इसका विस्तार है, वह पूरा इलाका मरुस्थल बन जाएगा। पर्यावरण और जैव विविधता की दृष्टि से भी इस पर्वत श्रृंखला का विशेष महत्व है। इसका सबसे ऊंचा शिखर माउंट आबू है, जो राजस्थान में है। तीन नदियां -साबरमती, लूणी और बनास इस पर्वत से निकलती हैं ।

अरावली पर्वतमाला के अस्तित्व को बचाने के लिए चिन्ता के साथ -साथ गंभीर चिन्तन भी होना चाहिए।

पहाड़ों, जंगलों और नदियों जैसे मूल्यवान प्राकृतिक संसाधनों को बचाए रखना स पूर्ण मानवता की अस्तित्व-रक्षा के लिए भी आवश्यक है।

हम सब आज तेज र ़तार आधुनिक विकास के युग में रहते हैं, जहां ईश्वर से प्राप्त पर्वतों,नदियों और जंगलों को भी हम लोग मु ़त की भौतिक वस्तु मानकर इनका बेतहाशा, बेतरतीब और बेरहमी से दोहन किए जा रहे हैं। अगर बहुत ही ज़रूरी हुआ तो इनका दोहन बहुत सीमित और संतुलित रूप से होना चाहिए, जिससे इनका अस्तित्व संकट में न पड़े और आर्थिक महत्व के साथ -साथ इनका प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सामाजिक सांस्कृतिक, धार्मिक और पर्यावरणीय महत्व भी कायम रहे । अरावली पर्वतमाला और उसके अभिन्न अंग गोवर्धन पर्वत की सुरक्षा के बारे में भी इन पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिए ।

सुप्रीम कोर्ट ने स्वत¬ लिया संज्ञान; खंडपीठ का गठन- आज 28 दिस बर को एक अच्छी ख़बर अरावली पर्वत के संदर्भ में देखने को मिली। अरावली पहाड़ियों की नई परिभाषा को लेकर उठे विवादों के बीच माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने इस मामले को स्वत¬ संज्ञान में लेकर तीन सदस्यों की खंडपीठ का गठन किया है।

इस महत्वपूर्ण और सकारात्मक ख़बर के अनुसार मु य न्यायाधीश जस्टिस सूर्यकांत की अध्यक्षता में गठित इस खंडपीठ में जस्टिस जे. के.माहेश्वरी और जस्टिस मसीह भी शामिल रहेंगे । वेकेशन के समय में भी माननीय सुप्रीम कोर्ट द्वारा इस बात की गंभीरता को समझते हुए इसे सुनवाई पर लेना, अरावली पर्वत के संदर्भ में एक सुखद भविष्य की और हमें इंगित करता है ।

उल्लेखनीय है कि इससे पहले केंद्र सरकार की सिफ़ारिशों के बाद सुप्रीम कोर्ट ने अरावली की जिस परिभाषा को स्वीकार किया है, उसके अनुसार आसपास की ज़मीन से कम से कम 100 मीटर (328 फीट) ऊंचे ज़मीन के हिस्से को ही अरावली पहाड़ी माना जाएगा। दो या उससे ज़्यादा ऐसी पहाड़ियां, जो 500 मीटर के दायरे के अंदर हों और उनके बीच ज़मीन भी मौजूद हो, तब उन्हें अरावली श्रृंखला का हिस्सा माना जाएगा । पर्यावरणविदों का कहना है कि सिर्फ़ ऊंचाई के आधार पर अरावली को परिभाषित करने से कई ऐसी पहाड़ियों पर खनन और निर्माण के लिए दरवाज़ा खुल जाने का ख़तरा पैदा हो जाएगा, जो 100 मीटर से छोटी हैं, झाड़ियों से ढंकी हैं और पर्यावरण के लिए ज़रूरी हैं ।

वन एवं पर्यावरण मंत्रालय का बयान - अरावली पहाड़ियों

की %नई परिभाषा% पर हो रहे विरोध के बीच पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने एक बयान जारी किया है । इस बयान के मुताबिक़, केंद्र सरकार ने राज्यों को निर्देश जारी कर अरावली क्षेत्र में किसी भी नई माइनिंग लीज़ को देने पर पूरी तरह रोक लगा दी है । यह प्रतिबंध पूरी अरावली पर समान रूप से लागू होगा ।

अरावली पर्वतमाला का विस्तार - गुजरात के अहमदाबाद क्षेत्र से होते हुए राजस्थान, उत्तरप्रदेश, हरियाणा और दिल्ली तक अरावली पर्वतमाला का विस्तार है। इसकी ल बाई 670 से 750 किलोमीटर तक है। इसकी ऊंचाई 1, 720 मीटर है। राजस्थान में अजमेर, उदयपुर, माउंट आबू और अलवर सहित हरियाणा के गुरुग्राम, फरीदाबाद और मेवात और दिल्ली के दक्षिणी रिज अरवली के हिस्से में आते हैं । हल्दी घाटी के ऐतिहासिक युद्ध की साक्षी है अरावली पर्वतमाला- इतिहासकारों के अनुसार यह पर्वतमाला महाराणा प्रताप के संघर्षो का भी साक्षी है । हल्दी घाटी इस पर्वतमाला का एक पहाड़ी दर्रा है। वर्ष 1576 में हल्दी घाटी की ऐतिहासिक लड़ाई महाराणा प्रताप और अकबर की मुग़ल सेना के बीच हुई थी।

मुग़ल सेना का नेतृत्व अकबर का सेनापति राजा मान सिंह कर रहा था और महाराणा प्रताप का सेनापति था हकीम खान सूर ।

इस युद्ध में जब मेवाड़ के किले पर मुगलों ने कब्जा कर लिया था, तब भी महाराणा प्रताप ने हार नहीं मानी। वे अपने परिवार और वफादार सिपाहियों को लेकर अरावली की गुफाओं में रहने लगे और तमाम कठिनाइयों के बीच यहीं से अकबर की मुग़ल सेना के खिलाफ़ वीरतापूर्ण संघर्ष किया।वर्ष 1583 में दिवेर की लड़ाई में महाराणा प्रताप ने मुगलों को पराजित कर दिया। इस प्रकार अरावली पर्वत महाराणा प्रताप और उनके सैनिकों की वीरता की भी कहानी कहता है। मरुस्थल के फैलाव को रोकने वाला पर्वत- विशेषज्ञ इसे दुनिया की बहुत पुरानी पर्वत श्रृंखला भी मानते हैं। इसे थार मरुस्थल के फैलाव को रोकने वाला पर्वत भी माना जाता है। यानी ईश्वर न करे, अगर कहीं यह नष्ट हो जाए तो शायद थार का रेगिस्तान इतना फैलेगा कि अभी जहां तक इसका विस्तार है, वह पूरा इलाका मरुस्थल बन जाएगा। पर्यावरण और जैव विविधता की दृष्टि से भी इस पर्वत श्रृंखला का विशेष महत्व है। इसका सबसे ऊंचा शिखर माउंट आबू है, जो राजस्थान में है। तीन नदियां -साबरमती, लूणी और बनास इस पर्वत से निकलती हैं । अरावली के उजड़ने पर ये नदियां भी संकट में पड़ जाएंगी। इस बारे में गंभीरता से सोचा जाना चाहिए । अरावली के इलाकों में भौगोलिक कारणों से बारिश भले ही कम होती हो, लेकिन जितनी भी होती है, उससे भू -जल की रिचार्जिंग और स्थानीय स्तर पर ज़मीन के भीतर जल -स्तर को संतुलित बनाए रखने में यह पर्वतमाला काफी मददगार है।

अरावली का मोर मुकुट है गोवर्धन पर्वत- धार्मिक दृष्टि से भी अरवली पर्वत बहुत महत्वपूर्ण है। उत्तरप्रदेश के मथुरा जिले में वृन्दावन के नज़दीक स्थित गोवर्धन पर्वत को भौगोलिक दृष्टि से अरावली पर्वत श्रृंखला का ही एक हिस्सा माना जाता है। हालांकि गोवर्धन पर्वत एक छोटी पहाड़ी है, लेकिन भारतीय संस्कृति में धार्मिक दृष्टि से यह लोक - आस्था का प्रमुख केन्द्र है। श्रद्धालुओं के लिए यह अरावली का मोर मुकुट है। इसे अरावली का दक्षिणी विस्तार भी माना जाता है हालांकि यह अरावली की एक आउट लाइन (स्ब्द्धह्ल)है जो कि ब्रज में बरसाना एवं कामवन (कामा) क्षेत्र तक फैली हुई है।

भारत के धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास में गोवर्धन पर्वत विशेष महत्व रखता है। मूलत¬ गोवर्धन पर्वत की लंबाई लगभग 8 किलोमीटर, चौडाई 4 किलोमीटर और ऊंचाई करीब 30 मीटर है ।

हज़ारों -लाखों तीर्थ यात्री करते हैं गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा- गोवर्धन पर्वत भगवान कृष्ण से जुड़ी एक महत्वपूर्ण कथा के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें उन्होंने अपनी उंगली पर गोवर्धन पर्वत को उठाकर गोकुलवासियों को मूसलाधार बारिश से बचाया था।

हजारों -लाखों तीर्थ यात्री अपनी आस्था, श्रद्धा और भक्ति भाव से गोवर्धन पर्वत की परिक्रमा करते है। गोवर्धन पर्वत के साथ- साथ बरसाना राधारानी की लीला स्थली रहा है। यहां मोरकुटी गहवर वन आदि धार्मिक क्षेत्र हैं। वहीं कामवन जिसे आदि वृंदावन के नाम से पुराणों में जाना गया है, वहां बद्रीनाथ, केदारनाथ और चरणपहाड़ी जैसे दर्शनीय स्थल भी हैं। अत¬ धार्मिक दृष्टि से बृज में अरावली की पर्वत श्रृंखला अत्यन्त महत्वपूर्ण और भगवान श्रीकृष्ण की लीला स्थली रही हैं।अवैध उत्खनन की ख़बरें चिन्ताजनक- गोवर्धन, बरसाना एवं कामवन के आसपास के क्षेत्र में अवैध खनन की खबरें चिन्ताजनक हैं, खासकर अडींग गांव एवं कामा क्षेत्र में। यहां मिट्टी की अवैध खनन की गतिविधियां चल रही हैं, जो पर्यावरण और स्थानीय निवासियों के लिए हानिकारक हैं। स्थानीय लोगों ने प्रशासन से अवैध खनन पर कार्रवाई करने की मांग की है ।वास्तव में अरावली भारत की एक महत्वपूर्ण पर्वत श्रृंखला है। इसके अस्तित्व पर अगर संकट मंडराने लगा है तो जनता में बेचैनी बहुत स्वाभाविक है। जन भावनाओं के अनुरूप इसके अस्तित्व की रक्षा के लिए सबको सजग होना चाहिए ।

दिग्विजय का ट्वीट और कांग्रेस में नई हलचल

शकील अख़्तर

भारत की राजनीति में यह तीन विचारधाराएं ही मु य रही हैं। लेफ् ट, राइट और सेंटर। सेंटर की पार्टी कांग्रेस जो मूलत¬ जन आंदोलन से उपजी। आजादी की लड़ाई का नेतृत्व के गौरव के साथ। संयोग से आज जब हम यह लिख रहे हैं तो इसका स्थापना दिवस भी है। 140 वां। ले ट राइट दोनों की पार्टियों से ज्यादा पुरानी। और पुरानी है तो इसके साथ लोगों की भावनाएं भी पुरानी है और उ मीदें भी। आरएसएस के संगठन और कांग्रेस के संगठन में फर्क है। कांग्रेस एक आजादी के आंदोलन से निकली पार्टी है। उसका संगठन किसी और पार्टी की तरह नहीं हो सकता। चाहे वह भाजपा आरएसएस हो या ले ट। भारत में ले ट की मूल पार्टी सीपीआई भी सौ साल की हो गई है। और उसकी ठीक विपरीत विचारधारा राइट की आरएसएस भी सौ साल की हो गई है।

भारत की राजनीति में यह तीन विचारधाराएं ही मु य रही हैं। ले ट, राइट और सेंटर। सेंटर की पार्टी कांग्रेस जो मूलत¬ जन आंदोलन से उपजी। आजादी की लड़ाई का नेतृत्व के गौरव के साथ। संयोग से आज जब हम यह लिख रहे हैं तो इसका स्थापना दिवस भी है। 140 वां। ले ट राइट दोनों की पार्टियों से ज्यादा पुरानी। और पुरानी है तो इसके साथ लोगों की भावनाएं भी पुरानी है और उ मीदें भी। क्या दिग्विजय सिंह का ट्वीट भी इन्हीं भावनाओं और उ मीदों से प्रेरित है? कांग्रेस के सबसे वरिष्ठ नेताओं में से एक। जिनकी आरएसएस और भाजपा से लड़ाई किसी से छुपी नहीं है। जो हर मौके बेमौके पर आरएसएस भाजपा पर हमला करते रहते हैं। श्रीनगर में भी उस समय कर दिया था जब राहुल अपनी भारत जोड़ो यात्रा का वहां समापन कर रहे थे। और दिग्विजय इस यात्रा के संयोजक थे। वहां उन्होंने पुलवामा हमले का सवाल उठा दिया था।

इसे कांग्रेस में बेमौके का सवाल माना गया था। क्योंकि भाजपा को दिग्विजय के बहाने राहुल की यात्रा पर हमला करने का मौका मिल गया था। ऐसे ही शनिवार को कांग्रेस की सर्वोच्च नीति निर्धारक इकाई सीडब्ल्यूसी की मीटिंग से ठीक पहले दिग्विजय ने मोदी का आडवानी की कुर्सी के नीचे जमीन पर बैठे होने का एक पुराना फोटो ट्वीट करते हुए उनके संगठन की तारीफ कर दी थी। जिसे लेकर कांग्रेस में बड़ा विवाद शुरू हो गया है। और बीजेपी खुश होकर इसे कांग्रेस के अंदरूनी संघर्ष के रूप में पेश कर करने लगी।

ट्वीट के पहले तक कोई सोच नहीं सकता था दिग्विजय कभी संघ भाजपा की तारीफ कर सकते हैं। अभी आठ- दस दिन पहले राज्यसभा में चुनाव सुधार की बहस पर दिग्विजय ने मोदी और अमित शाह पर बहुत कड़े हमले किए थे। मगर इस ट्वीट के बाद दिग्विजय कांग्रेस में भी निशाने पर आ गए हैं। वैसे कांग्रेस में दिग्विजय का निशाने पर आना कोई खास बात नहीं है। यूपीए के समय में मीडिया डिपार्टमेंट रोज उन्हें चेतावनियां देता था। उस समय के चैयरमेन जनार्दन द्विवेदी उनके बयानों को व्यक्तिगत बताते हुए कहते थे पार्टी का इससे कोई संबंध नहीं है। द्यह्यश ऋद्धड्डस्र - 2026 ॅ हिंदू राष्ट्र की धमक! मगर वह समय अलग था। सोनिया गांधी कांग्रेस अध्यक्ष थीं। जिन्हें याद था कि 2004 से पहले कांग्रेस चलाने में दिग्विजय कितनी मदद करते थे। 2003 तक दिग्विजय मध्य प्रदेश के मु यमंत्री थे। और उस समय केवल दो राज्यों में कांग्रेस सरकार थी। मध्य प्रदेश और केरल। और केरल के मु यमंत्री थे ए के एंटोनी। जिन्हें पार्टी में ही नहीं पार्टी के बाहर भी ईमानदारी का अवतार माना जाता है। पार्टी चलाने का सारा खर्चा दिग्विजय वहन करते थे। 1998 में सोनिया गांधी ने जब कांग्रेस की बागडोर संभाली तब उनका भारी विरोध हो रहा था। उन्हें स्वीकार्यता दिलाने के लिए दिग्विजय ने 1998 में कांग्रेस का पहला चिंतन शिविर पचमढ़ी में आयोजित किया था। जिसके बाद ही सोनिया पार्टी की एकमात्र नेता के रूप में स्थापित होना शुरू हो गईं थीं। तो 2004 की लोकसभा जीत के बाद सोनिया के दिल में दिग्विजय का विशेष स्थान रहा। यह इस बात से और बढ़ गया कि उन्होंने यूपीए सरकार में मंत्री पद लेने से मना कर दिया। राजनीति में कोई पद के लिए मना करे ऐसा होता नहीं। और कांग्रेस में तो खासतौर से नहीं। मगर दिग्विजय ने प्रण किया था कि अगर 2003 विधानसभा में कांग्रेस हार जाएगी तो वे दस साल तक कोई सरकारी पद नहीं लेंगे। और उन्होंने ऐसा किया भी। मगर अब जनरेशन चेंज हो गया है। सोनिया गांधी डीसिजन में कहीं नहीं हैं। कई वरिष्ठ नेताओं के साथ दिग्विजय की पीड़ा भी यही है कि कभी संगठन में इतनी महत्वपूर्ण स्थिति में रहने के बाद अब अवांछनीय हो गए हैं। इस बेमौके ट्वीट के पीछे यह दर्द हो सकता है। उन्होंने ट्वीट के बाद खुद कहा कि वे आरएसएस भाजपा के घोर विरोधी हैं। संगठन के एक पहलू की तारीफ करना विचारधारा की तारीफ नहीं है। लेकिन उनकी राज्यसभा खत्म होने की कहानी सुनाई जा रही है। हालांकि पता नहीं कितने लोगो को मालूम है वे साफ कह चुके हैं कि अब वे राज्यसभा नहीं लेंगे। लेकिन जाते हुए 2025 में यह एक नया विवाद हो गया है। साल शुरू से ही कांग्रेस के लिए अच्छा नहीं रहा। एक भी विधानसभा चुनाव नहीं जीती। 2024 में लोकसभा का चुनाव छोड़ दिया जाए तो राज्यों में भी उसे कोई सफलता नहीं मिली। केवल झारखंड में वह मिलीजुली सरकार में वापस आ पाई। सबसे ज्यादा अप्रत्याशित नतीजे हरियाणा के रहे। जहां सब कांग्रेस की जीत मान रहे थे। वहां भी बीजेपी जीत गई। महाराष्ट्र और बिहार में मुकाबला बराबरी का माना जा रहा था मगर वहां नतीजे एकदम इकतरफा रहे। लेकिन इन सारी हारों के बाद भी लोगों की कांग्रेस से उ मीदें कम नहीं हुईं। क्या है वजह? वजह यह है कि लोग आज चाहे जितने नफरत और विभाजन की सनसनी में जी रहे हों मगर अंदर से प्रेम शांति सुख चाहते हैं। और कांग्रेस इन्हीं मूल्यों का प्रतिनिधित्व करती है। 140 साल में बहुत उतार चढ़ाव आए मगर कांग्रेस के मूल सिद्धांत वही रहे। गरीब समर्थक और सांप्रदायिक सौहार्द्र। निर्भयता और आशावाद। और यही वजह है कि जनता को अगर उ मीदें हैं तो उसी से। और इसी से ताकत पाकर कांग्रेस लड़ती है। 2026 के लिए दो बड़े आंदोलनों का कार्यक्रम उसने जारी कर दिया। 5 जनवरी से मनरेगा हटाए जाने के खिलाफ और 7 जनवरी से अरावली बचाओ। दोनों सीधे जनता से जुड़े मुद्दे हैं। और अब जनता को यहां खासतौर से ग्रामीण जनता को सोचना चाहिए कि वह मनरेगा चाहती है या सामंतों के यहां बेगारी या शहर आकर सस्ता मजदूर बनकर बड़े उद्योगपतियों का मुनाफा बढ़ाना। ऐसे ही अरावली के मामले में सोचना चाहिए कि एयरपोर्ट, बंदरगाह, रेल्वे स्टेशन दूसरे सरकारी उपक्रम बेचते बेचते यह पर्वतमालाएं भी बेचने लगे। नदियां, जंगल, पहाड़ सब बिक जाएगा। और फिर हवा जमीन पानी कुछ भी देश का सरकार का नहीं रहेगा। सब जैसा राहुल कहते हैं अडानी अंबानी को दे दिया जाएगा। हवा के बारे में आजकल आप सुन ही रहे हैं कि कोर्ट कह रहा है एयर प्यूरी फायर से टैक्स कम करो। सरकार कह रही है यह हमारे हाथ में नहीं है। जीएसटी कौंसिल है वह देखती है। मगर यह बहस ही बेकार और खतरनाक है। मुद्दा यह होना चाहिए कि जनता को साफ हवा मुहैया करवाओ। यह क्या हुआ कि प्यूरी फायर दो चार सौ रूपए सस्ता करो। कितना भी सस्ता कर दो हजारों में ही रहेगा। और क्या जनता प्यूरी फायर लगाकर घर में ही बैठी रहेगी? ऐसे ही हमने पढ़ा कि स्कूलों में लगाओ। क्या मजाक है। बच्चे क्लास रूम में ही बैठे रहेंगे। हवा पानी साफ करो। यह आवाज होना चाहिए।

विविध समाचार

प्रवीण अत्रे बने मुख्यमंत्री के मीडिया सचिव काम करने पर मुख्यमंत्री नायब सैनी का तोहफा

चंडीगढ १२/०१ (संवाददाता): हरियाणा सरकार में एक और नई एंट्री हो गई है। प्रवीण अत्रे को बड़ी जिम्मेदारी देते हुए उन्हें मुख्यमंत्री का मीडिया सचिव नियुक्त किया है। प्रवीण अत्रे पहले लोक संपर्क विभाग के मीडिया सेक्रेटरी थे। अब बड़ी जिम्मेदारी देते हुए प्रवीण अत्रे को सीएम का मीडिया सेक्रेटरी बनाया गया है।मुख्यमंत्री के मीडिया सैक्ट्री का पद पहले 1991 में भजनलाल सरकार में दिल्ली हरियाणा भवन के लिए सृजित रहा है।उसके बाद मुख्यमंत्री के मीडिया सचिव पद पर भजनलाल सरकार हटने के बाद 1996 उपरांत 29 वर्ष यह पद पुनः सृजित हुआ है।इस बार दिल्ली हरियाणा भवन की जगह चंडीगढ सचिवालय इसका मुख्यालय रखा गया है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के सीएम के मीडिया सचिव पद पर प्रवीण अत्रे की नियुक्ति कर उन पर अपना पूरा भरोसा जताया है। प्रवीण अत्रे ने लोकसभा व विधानसभा चुनावों में मीडिया से सामंजस्य रख कर जिस तरह अपनी बेहतरीन कार्य प्रणाली से अपने काम की प्रमाणिकता दी थी, उससे नायब सैनी व केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल दोनों इनसे खुश थे। एक बार फिर से मुख्यमंत्री के मीडिया संबंधित बड़ी जिम्मेदारी दी गई है। भाजपा के संगठन और मुख्यमंत्री कार्यालय ने हरियाणा में तीसरी बार एतिहासिक जीत दर्ज करने के बाद भाजपा ने प्रवीण अत्रे को दी जाने वाली जिम्मेदारी पर अपनी अंतिम मुहर लगाई है।

प्रवीण अत्रे ने लोकसभा व विधानसभा चुनावों में मीडिया से सामंजस्य रख कर जिस तरह अपनी बेहतरीन कार्य प्रणाली से अपने काम की प्रमाणिकता दी थी,उस से नायब सैनी व केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल दोनों इनसे खुश थे। एक बार फिर से मुख्यमंत्री के मीडिया संबंधित बड़ी जिम्मेदारी दी गई है। भाजपा के संगठन और मुख्यमंत्री कार्यालय ने हरियाणा में तीसरी बार एतिहासिक जीत दर्ज करने के बाद भाजपा ने प्रवीण अत्रे को दी जाने वाली जिम्मेदारी पर अपनी अंतिम मुहर लगाई है। हरियाणा के विधानसभा चुनाव में प्रवीण अत्रे मुख्यमंत्री के लिए मीडिया संबंधी कार्यों को बखूबी निभाकर अपनी कार्यकुशलता का परिचय दे चुके हैं। इसके अलावा प्रवीण अत्रे को पुराना मीडिया संबंधी अच्छा अनुभव है। पूर्व में अत्रे ने इलेक्ट्रॉनिक चौनल में सरकार का पक्ष रखने की कमान भी बखूबी संभाली थी। यहां तक की चौनल में पार्टी की ओर से गेस्ट भेजने की जिम्मेदारी भी उनके ही पास थी। जानकारों की माने तो अत्रे को मुख्यमंत्री के मीडिया सचिव या मीडिया सलाहकार के रूप में नियुक्ति मिलने के कारणों में इनका प्रखर अंदाज भी सहायक बना है। मीडिया रिपोर्ट की माने तो पूर्व मुख्यमंत्री और मौजूदा केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल भी मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी से प्रवीण अत्रे को लेकर अपनी सिफारिश पहले ही कर चुके थे । बता दें कि हरियाणा में मनोहर सरकार के दौरान प्रवीण अत्रे मुख्यमंत्री के मीडिया सचिव के पद पर कार्यरत थे। नायब सैनी के मुख्यमंत्री बनने के बाद भी वह उसी पद पर बरकरार रहे थे। हालांकि विधानसभा चुनाव की घोषणा के बाद आचार संहिता लगने पर अत्रे ने मुख्यमंत्री के मीडिया सचिव के पद से इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद चुनाव के दौरान उन्होंने मुख्यमंत्री नायब सैनी के मीडिया को संभालने का कार्य किया था। मुख्यमंत्री के मीडिया सचिव रहते हुए प्रवीण अत्रे पत्रकारों की कई मांगों को सरकार से पूरा करवा चुके हैं। सरकार और पत्रकारों के बीच एक कड़ी का काम करते हुए जहां प्रवीण अत्रे पत्रकारों को आने वाली दिक्कत से मुख्यमंत्री को अवगत करवाकर उन्हें दूर करने की कोशिश करते हैं। वहीं, वह सरकार के कार्यों को भी बखूबी आम जन तक पहुंचाने के लिए बेबाक रूप से मीडिया के बीच अपनी बात रखने का कार्य करते हैं। प्रवीण अत्रे मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के पहले कार्यकाल में उनके अत्यंत करीबी रहे। प्रवीण अत्रे ने मीडिया संगठनों, डीजीआईपीआर से समन्वय रख चंडीगढ़ में खुद को प्रमाणिक किया हुआ है। ताजा तरीन घटनाओं तथा विपक्ष के बयानों पर प्रवीण अत्रे बखूबी प्रतिक्रिया देते हैं। प्रवीण अत्रे चुनाव से पहले पत्रकारों को कैशलैस सुविधा देने की पूरी वकालत करते रहे हैं। अत्रे के सार्थक प्रयासों से नायब सैनी ने सालों से चली आ रही पत्रकारों की दो मांगों को पूरा करने का काम किया था, जिनमें पत्रकार पर केस दर्ज होने की सूरत में उसकी पेंशन राशि और अन्य सरकारी सुविधाओं को बंद करना और एक परिवार में एक ही पत्रकार को पेंशन राशि देना शामिल था। प्रवीण अत्रे की सिफारिश पर ही मुख्यमंत्री नायब सैनी ने दोनों योजनाओं में बदलाव किया और केवल एफआईआर दर्ज होने पर ही सभी सरकारी सुविधाएं और पेंशन बंद नहीं किए जाने का ऐलान किया। इसके साथ ही परिवार में दो पत्रकार होने पर उन दोनों को ही सरकार की ओर से पेंशन राशि देने की भी मुख्यमंत्री ने घोषणा की थी। अत्रे शुरु से ही मीडिया और सरकार के बीच एक कड़ी का कार्य करते रहे हैं। वह पत्रकारों को आने वाले दिक्कतों को जानकर उन्हें मुख्यमंत्री तक पहुंचाकर उनका हल निकालने की कोशिश में लगे रहते हैं।

अमृतसर में ऑनलाइन गेमिंग की लत में बहन की हत्या

अमृतसर १२/०१ (संवाददाता): बाद कमरे से आवाज सुनकर परिवार वहां पहुंचा। निशा की मौत हो चुकी थी और संजू के हाथ खून से सने हुए थे। पुलिस जांच में पता चला कि संजू ऑनलाइन गेमिंग और बेटिंग का आदी था। घटना वाली रात वह निशा के कमरे में चोरी करने आया था। छह महीने पहले वह 5 लाख रुपए गंवा चुका था। अपनी लत के कारण उसने अपना एक्टिवा और फोन भी बेच दिया था। निशा ने उसे चोरी करते देख लिया और रोकने की कोशिश की। इसी दौरान संजू ने घरेलू चाकू से उसकी हत्या कर दी।

पुलिस ने आरोपी को मौके से ही गिरफ्तार कर लिया है। ऑनलाइन गेमिंग और बेटिंग की लत के चलते भाई ने बहन की हत्या कर दी। घटना मोहकमपुरा राजेश नगर की है। रात के समय युवती पढ़ाई कर रही थी। उसने भाई को चोरी करते पकड़ लिया। जिसके बाद उसने बहन की चाकू से हत्या कर दी। जानकारी के अनुसार आरोपी संजीव उर्फ संजू और मृतका निशा दोनों 22 वर्षीय बीसीए के छात्र थे। दोनों 22 तारीख की फाइनल परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। रात करीब 12रू30 बजे निशा की मां ने उसे सोने के लिए कहा। निशा ने पढ़ाई पूरी करने के बाद सोने की बात कही। कुछ देर

बोहती देवी फाउंडेशन द्वारा रक्तदान शिविर का सफल आयोजन

जगाधरी १२/०१ (संवाददाता): बोहती देवी फाउंडेशन, जगाधरी के तत्वावधान में एक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसका शुभारंभ श्रीमती मीनाक्षी ने दीप प्रज्वलन कर किया। इस अवसर पर उन्होंने रक्तदान के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि रक्तदान संसार का सबसे बड़ा और पवित्र दान माना गया है, क्योंकि यह न केवल किसी जरूरतमंद का जीवन बचाता है, बल्कि एक पूरे परिवार में नई उम्मीद और खुशियां भी भरता है। श्रीमती मीनाक्षी ने लोगों को रक्तदान के प्रति जागरूक करते हुए कहा कि इससे शरीर पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ता, बल्कि रक्तदान के बाद व्यक्ति स्वयं को अधिक तरोताजा और ऊर्जावान महसूस करता है। उन्होंने यह भी कहा कि रक्तदान न केवल सराहनीय है, बल्कि समाज के लिए एक प्रेरणास्रोत भी है। शिविर में भाग लेने वाले सभी रक्तदाताओं को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। आयोजन में स्थानीय नागरिकों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया और मानवता की सेवा में अपना योगदान दिया।

13वीं स्टील स्ट्रिप्स ग्रुप नेशनल ओपन ब्रिज चौंपियनशिपे, सभी तैयारियां पूरी

चंडीगढ १२/०१ (संवाददाता): पंजाब ब्रिज एसोसिएशन द्वारा स्टील स्ट्रिप्स ग्रुप के सहयोग से 23 से 25 मई तक आयोजित होने वाली 13वीं स्टील स्ट्रिप्स ग्रुप नेशनल ओपन ब्रिज चौंपियनशिप के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। चंडीगढ़ के होटल माउंटव्यू में होने वाली इस चौंपियनशिप में देश के राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर के ब्रिज खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। पंजाब के पूर्व मुख्य सचिव और पंजाब ब्रिज एसोसिएशन के अध्यक्ष व टूर्नामेंट कमेटी के चेयरमैन के.आर. लखनपाल ने बताया कि राष्ट्रीय चौंपियनशिप में देश भर की 40 टीमों के 200 से अधिक खिलाड़ी हिस्सा लेंगे, जिनमें 2023 में हांग्जो एशियाई खेलों में चांदी का पदक जीतने वाले खिलाड़ियों सहित भारत के कई अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय विजेता खिलाड़ी शामिल होंगे। और जानकारी देते हुए श्री लखनपाल ने कहा कि यह 13वीं राष्ट्रीय चौंपियनशिप है जिसमें देश भर के खिलाड़ी हिस्सा लेंगे। टूर्नामेंट की कुल इनामी राशि दो श्रेणियों पेयर और टीम में कुल 8 लाख रुपये है। महिलाएं और युवा खिलाड़ी भी बड़ी संख्या में हिस्सा लेंगे। टूर्नामेंट के तकनीकी पहलुओं की निगरानी भारत के प्रसिद्ध ब्रिज तकनीकी विशेषज्ञ टीसी पंत कर रहे हैं। श्री लखनपाल ने आगे कहा कि अंतर्राष्ट्रीय ओलंपिक समिति द्वारा मान्यता प्राप्त ब्रिज 2018 से एशियाई खेलों का भी हिस्सा है। भारत में ब्रिज फेडरेशन ऑफ इंडिया 1952 से काम कर रही है। टूर्नामेंट कमेटी के वाइस चेयरमैन और पंजाब ब्रिज एसोसिएशन के उपाध्यक्ष विश्वजीत खन्ना ने कहा कि हम इस क्षेत्र और देश भर में ब्रिज के प्रचार के लिए पिछले 2 दशकों से नेशनल ब्रिज फेडरेशन के साथ साझेदारी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि यह चौंपियनशिप इस अभिनव खेल में उभरते खिलाड़ियों के लिए एक बेहतरीन मंच है। प्रबंधकीय कमेटी के सदस्यों कृष्ण गोयल, जेएस बहल, अरविंद गुप्ता और दुर्गेश मिश्रा ने आने वाले खिलाड़ियों और विशेष मेहमानों के लिए उचित प्रबंध पूरे होने की बात कही।

हाकम थापर ने डिप्टी डायरेक्टर, सूचना एवं लोक संपर्क, जालंधर के तौर पर पदभार संभाला

जालंधर। जिला लोक संपर्क अधिकारी (डी.पी.आर.ओ) हाकम थापर ने पदोन्नति के बाद औपचारिक तौर पर सूचना एवं लोक संपर्क विभाग, जालंधर के डिप्टी डायरेक्टर के तौर पर कार्यभार संभाल लिया है। उन्होंने ज्वाइंट डायरेक्टर मनविंदर सिंह की उपस्थिति में पदभार ग्रहण किया,

दुश्मनों से नहीं इंसाफ की लड़ाई हार गया सैनिक : साथी ने पत्नी के साथ की घिनौनी हरकत, इंसाफ नहीं मिला तो दी जान

बठिंडा १२/०१ (संवाददाता): पंजाब के बठिंडा में भारतीय वायुसेना के जवान ने अपने अधिकारियों से आहत होकर जान दे दी। बठिंडा के गांव भिसीआणा में स्थित एयरफोर्स स्टेशन के चीफ वर्क्स इंजीनियरिंग विभाग में तैनात नायक सोनू यादव ने जहर निगल मौत को गले लगा लिया। जवान ने मरने से पहले एक वीडियो भी बनाया है, जिसमें उसने एयरफोर्स कर्मियों के नाम उजाकर करते हुए उन्हें अपनी मौत का जिम्मेदार ठहराया है। वायुसेना के जवान की मौत की वजह हैरान कर देने वाली है। आरोप है कि सोनू यादव की पत्नी के साथ हलवदार ने छेड़छाड़ की थी। इसकी शिकायत सोनू ने उच्चाधिकारियों से की थी, लेकिन उसे इंसाफ नहीं मिला। आरोप है कि सीनियर अधिकारी ही सोनू यादव को परेशान करने लगे थे। इस बात से आहत सोनू यादव ने जहर निगल लिया। सोनू यादव ने रेलवे लाइन बादल रोड के पास जहर निगल लिया और उसकी मौत हो गई। मामले की जांच जीआरपी पुलिस कर रही है। थाना जीआरपी पुलिस ने मृतक जवान सोनू यादव के पिता सुरेश कुमार की शिकायत पर एयरफोर्स स्टेशन के चीफ वर्क्स इंजीनियरिंग विभाग में तैनात मुख्य अधिकारी एसके पांडे, सहायक विकास गांधी, सहायक तेज राम मीना, हवलदार राजीव, हवलदार सतीश के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया है। थाना जीआरपी पुलिस को मृतक जवान के पिता सुरेश कुमार ने बताया कि उनका बेटा सोनू यादव वायुसेना में नायक के पद पर था। मौजूदा समय में वह बठिंडा के भिसीआणा स्थित एयरफोर्स स्टेशन के चीफ वर्क्स इंजीनियरिंग विभाग में तैनात था। सोनू यादव पत्नी के साथ एयरफोर्स स्टेशन के सरकारी क्वार्टर में रहता था। सोनू यादव ने पिता को फोन पर बताया था कि कुछ दिन पहले उनके पड़ोस वाले क्वार्टर में रहने वाले हवलदार सतीश ने उसकी पत्नी के साथ छेड़छाड़ करते हुए अश्लील इशारे किए थे। इस बात को लेकर सोनू यादव की हवलदार सतीश के साथ लड़ाई हुई थी। इसके बारे में सोनू ने अपने उच्च अधिकारियों के पास हवलदार सतीश के खिलाफ शिकायत भी की थी। आरोप है कि प्रमुख अधिकारी एसके पांडे, सहायक विकास गांधी, सहायक तेज राम मीना, हवलदार रजीव ने उनके बेटे सोनू यादव की शिकायत पर कारवाई करने की बजाय हवलदार सतीश का पक्ष लेते हुए सोनू को ही तंग परेशान करना शुरू कर दिया था। सोनू यादव को इंसाफ दिलाने की बजाय उसे कवार्टर खाली करने के लिए दबाव बनाना शुरू शुरू कर दिया।

दुखी होकर सोनू ने मंगलवार रात को रेलवे लाइन बादल रोड के समीप जहर निगल कर जान दे दी। थाना जीआरपी के सब इंस्पेक्टर जसवीर सिंह का कहना है कि पुलिस ने मृतक सोनू यादव के पिता सुरेश कुमार के बयान पर एयरफोर्स स्टेशन के चीफ वर्क्स इंजीनियर विभाग में तैनात मुख्य अधिकारी एसके पांडे, सहायक विकास गांधी, सहायक तेज राम मीना, हवलदार राजीव, हवलदार सतीश के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज करके उनकी गिरफ्तारी के लिए कार्रवाई शुरू कर दी गई है। थाना जीआरपी पुलिस ने मृतक जवान सोनू यादव के पिता सुरेश कुमार की शिकायत पर एयरफोर्स स्टेशन के चीफ वर्क्स इंजीनियरिंग विभाग में तैनात मुख्य अधिकारी एसके पांडे, सहायक विकास गांधी, सहायक तेज राम मीना, हवलदार राजीव, हवलदार सतीश के खिलाफ विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया है। थाना जीआरपी पुलिस को मृतक जवान के पिता सुरेश कुमार ने बताया कि उनका बेटा सोनू यादव वायुसेना में नायक के पद पर था। मौजूदा समय में वह बठिंडा के भिसीआणा स्थित एयरफोर्स स्टेशन के चीफ वर्क्स इंजीनियरिंग विभाग में तैनात था। सोनू यादव पत्नी के साथ एयरफोर्स स्टेशन के सरकारी क्वार्टर में रहता था।

Printed, Published,Edited, & Owned by Prakash Kumar Dhal, Printed at Promodini Publication, Main road , Chhend colony , Rourkela-15 & Published at ECR-73, Chhend Colony, Rourkela-15, Editor : Prakash kumar Dhal, Email:kalingasamachar@gmail.com , Mob: 9439951525, Ph. 0661-2646999

ओडिशा समाचार

कलिंग समाचार

राउरकेला, मंगलवार 13 जनवरी 2026 पृष्ठ-6

राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह-2026 के अवसर पर आरएसपी में सड़क सुरक्षा अभियान आयोजित

राउरकेला १२/०१ (संवाददाता): राष्ट्रीय स्तर पर 1 से 31 जनवरी 2026 तक मनाए जा रहे राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह-2026 के उपलक्ष्य में सेल, राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) में सड़क सुरक्षा जागरूकता से जुड़े अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इस व्यापक अभियान में संयंत्र के विभिन्न विभागों के कर्मचारियों एवं ठेका श्रमिकों की सक्रिय और उत्साहपूर्ण भागीदारी देखने को मिल रही है। सेल, राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) में सुरक्षा जागरूकता कार्यक्रम के तहत, 5 जनवरी 2026 को कैप्टिव पावर प्लांट-1 कर्मीसमूह द्वारा सीपीपी-1 से सिंटरिंग प्लांट रास्ते तक एक मानव श्रृंखला बनाई गई। इस अभियान का नेतृत्व मुज्य महाप्रबंधक (पावर), श्री दीपक रॉय और महाप्रबंधक प्रभारी (ओ एवं एम- सीपीपी-1), श्री एन सी परिडा ने किया। इस कार्यक्रम में अधिकारियों और ठेका श्रमिकों सहित 300 से ज्यादा लोगों ने हिस्सा लिया। उप महाप्रबंधक (सीपीपी-1) और विभागीय सुरक्षा अधिकारी, श्री रंजीत रंजन, उप प्रबंधक (सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग), श्री रोहित नायक, श्री आर एन पाणिग्रही, और सहायक प्रबंधक (सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग), श्री रितेश पटेल ने कार्यक्रम का समन्वय किया। इससे पूर्व, 2 जनवरी 2026 को सेल, राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) में राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा माह के शुभारंभ के अवसर पर संस्कार गेट से मेन गेट तथा कार्यपालक निदेशक (संकार्य) चौक तक लगभग 800 प्रतिभागियों द्वारा एक विशाल मानव श्रृंखला का गठन किया गया। इस अभियान का नेतृत्व मुज्य महाप्रबंधक (सुरक्षा एवं अग्निशमन सेवा), श्री हीरालाल महापात्र तथा महाप्रबंधक (सुरक्षा), श्री अबकास बेहरा ने किया। आरएसपी की विभिन्न इकाइयों के विभागीय सुरक्षा अधिकारियों एवं विभिन्न ठेका एजेंसियों के सुरक्षा अधिकारियों की इस आयोजन को सफल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम का समन्वय सहायक महाप्रबंधक (सुरक्षा अभियांत्रिकी), श्री विक्रम पाढ़ी के साथ आरएसपी की सुरक्षा अभियांत्रिकी टीम द्वारा किया गया। भाग लेने वालों ने उत्साह से मानव श्रृंखला बनाने के लिए लाइन लगाई, और ऐसे प्लेकार्ड पकड़े हुए थे जिन पर ज़रूरी सुरक्षा संदेश लिखे थे। इन प्लेकार्ड में सड़क सुरक्षा के महत्वपूर्ण पहलुओं पर ज़ोर दिया गया था, जैसे ट्रैफिक नियमों का पालन करना, सुरक्षित सड़क व्यवहार, गाड़ी चलाते समय मोबाइल फोन का सीमित उपयोग, ओवरटेकिंग से बचना, रेड लाइट उल्लंघन से बचना, असुरक्षित ड्राइविंग तरीकों से बचना, और सयंत्र परिसर के अंदर गति सीमा का पालन करना। मानव श्रृंखला ने सुरक्षा के प्रति संगठन की प्रतिबद्धता और अपने कर्मचारियों और हितधारकों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए उसके सक्रिय दृष्टिकोण को दोहराया। इस नेक काम के लिए एकजुट होकर, प्रतिभागियों ने सड़कों को सुरक्षित बनाने और दूसरों को भी अपने दैनिक जीवन में सुरक्षा को प्राथमिकता देने के लिए प्रोत्साहित करने के प्रति अपना समर्पण दिखाया।

आज शिशिर सरस-2026 को रंग-बिरंगी पतंगों से रोशन किया जाएगा

भुवनेश्वर १२/०१ (संवाददाता): मकर संक्रांति के दौरान पतंग उड़ाने की पारंपरिक खुशी और सांस्कृतिक विरासत से नई पीढ़ी को फिर से जोड़ने के लिए, ओरमास और मिशन शक्ति बुधवार को सिसिर सरस 2026 मेले में एक खास पतंग शो का आयोजन करेंगे। यह पतंग शो शाम 4 बजे से 5 बजे तक होगा, जब आसमान पारंपरिक और मॉडर्न डिज़ाइन वाली रंग-बिरंगी पतंगों से जगमगा उठेगा। पक्षियों और जानवरों के आकार की खास गुज्बारे वाली पतंगें बच्चों के लिए खास आकर्षण होंगी। लोगों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए, आयोजकों ने घोषणा की है कि इस साल मांझा (कांच की परत वाली डोरी) का इस्तेमाल नहीं किया जाएगा, ताकि यह सुरक्षित और इको-फ्रेंडली जश्न मनाया जा सके।

इससे पहले, दिन में दोपहर 2 बजे से शाम 4 बजे तक, पारंपरिक और क्रिएटिव पतंग बनाने की कला को बढ़ावा देने के लिए पतंग बनाने की वर्कशॉप का आयोजन किया जाएगा। बच्चों और युवाओं को प्रैक्टिकल ट्रेनिंग दी जाएगी और बाद में वे खुद बनाई पतंगें उड़ाएंगे। अपने हुनर के आधार पर, चुने गए प्रतिभागी गुरुवार को होने वाले पतंग उड़ाने के कॉम्पिटिशन में हिस्सा लेंगे। इस पहल का स्वागत करते हुए, पंचायती राज और पीने के पानी और ग्रामीण विकास मंत्री रबी नारायण नाइक ने कहा कि ओडिशा सरकार राज्य की समृद्ध सांस्कृतिक परंपराओं को बचाने और बढ़ावा देने के लिए पूरी तरह तैयार है। उन्होंने राजधानी के लोगों से सिसिर सरस में हिस्सा लेने और मकर संक्रांति को खुशी और उत्साह के साथ मनाने की अपील की।

मंत्री ने आगे कहा कि मेले में ज़्यादा लोगों के आने से ग्रामीण प्रोडक्ट्स की बिक्री बढ़ेगी और राज्य भर के गांवों में त्योहारों की खुशी फैलाने में मदद मिलेगी। 'मिनी इंडिया फेयर' के नाम से मशहूर, सिसिर सरस न केवल ओडिया संस्कृति बल्कि देश भर की अलग-अलग परंपराओं को भी दिखाता है। इस सांस्कृतिक आदान-प्रदान के हिस्से के तौर पर, बुधवार शाम को मेले में असम का बिहू लोक नृत्य पेश किया जाएगा। इस बीच, मेले में खाने-पीने के स्टॉल, हैंडीक्राफ्ट और हैंडलूम दुकानों पर भारी भीड़ देखी जा रही है। लाइव डेमो काउंटर, जहाँ विज़िटर संबलपुरी ज्वेलरी, लाख की चूड़ियाँ और सबई घास से बनी चीज़ें बना सकते हैं, ने युवा विज़िटर्स का खास ध्यान खींचा है। खास बात यह है कि शिशिर सरस मेले के पहले तीन दिनों में बिक्री 3.6 करोड़ रुपये से ज़्यादा हो गई है, और आने वाले दिनों में इसमें और बढ़ोतरी की उम्मीद है।

ढेंकनाल के एक स्कूल में पीलिया के दो मामले सामने आए

ढेंकनाल १२/०१ (संवाददाता): ओडिशा के ढेंकनाल जिले के एक स्कूल में पीलिया के दो मामले सामने आए हैं, जिसके चलते स्थानीय स्वास्थ्य अधिकारियों ने एहतियाती उपायों को तेज कर दिया है। ढेंकनाल के मुज्य जिला चिकित्सा एवं जन स्वास्थ्य अधिकारी (सीडीएम एवं पीएचओ) संजय मोहपात्रा ने कहा कि फिलहाल पीलिया का कोई प्रकोप नहीं है और उन्होंने जोर देकर कहा कि स्थिति नियंत्रण में है। अभी तक पीलिया का कोई प्रकोप नहीं हुआ है, और हम इसे रोकने के लिए काम कर रहे हैं। स्थिति नियंत्रण में है। हमें स्कूल में पीलिया के दो मामलों की जानकारी मिली थी, मोहपात्रा ने कहा।उन्होंने आगे कहा कि स्वास्थ्य और शिक्षा विभागों के अधिकारियों की एक संयुक्त टीम ने स्थिति का आकलन करने के लिए स्कूल का दौरा किया है। उन्होंने कहा, आज मैं जिला शिक्षा अधिकारी, ग्रामीण जल आपूर्ति योजना के अधिकारियों, खाद्य सुरक्षा अधिकारी और सूक्ष्मजीवविज्ञानी के साथ यहां आया हूं। हम यहां से खाद्य और जल के नमूने एकत्र कर रहे हैं ताकि पता चल सके कि पानी या भोजन में कोई संदूषण तो नहीं है। यह घटनाक्रम खुर्दा जिले के गुरुजंगा गांव स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय (जेएनवी) में हाल ही में हुए पीलिया के प्रकोप की पृष्ठभूमि में सामने आया है, जहां छात्रों के बीच मामलों में वृद्धि ने चिंताएं बढ़ा दी थीं। उस घटना के बाद से, राज्य की स्वास्थ्य व्यवस्था सतर्क हो गई है और निगरानी एवं देखरेख बढ़ा दी गई है।अधिकारियों ने कहा कि वे बिश्वनाथपुर आदर्श स्कूल में स्थिति पर कड़ी नजर रख रहे हैं और उन्होंने आश्वासन दिया है कि यदि कोई अतिरिक्त मामले सामने आते हैं तो आवश्यक कदम उठाए जाएंगे।

बाद में 10 जनवरी को, ओडिशा के सार्वजनिक स्वास्थ्य निदेशक डॉ. नीलकंठ मिश्रा ने कहा कि उस क्षेत्र में अभी तक कोई नया मामला सामने नहीं आया है और यदि संज्या बढ़ती है तो स्थिति के अनुसार कार्रवाई की जाएगी। स्वास्थ्य अधिकारियों ने आगे बताया कि पीलिया के बढ़ते मामलों का संबंध दूषित पानी से है। शुक्रवार को ओडिशा के जन स्वास्थ्य निदेशक डॉ. नीलकंठ मिश्रा ने कहा, इसका स्रोत पानी है, यानी मल-मूत्र से दूषित पानी, जिसका अर्थ है कि पानी दूषित था और सिस्टम में प्रवेश कर गया। जो भी उस पानी को पीता है या जिसके भोजन में वह पानी इस्तेमाल होता है, वह खतरे में है। पानी को शुद्ध करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं ताकि वह साफ और पीने योग्य हो सके।

ग्लोबल वीज़ा एप्लीकेशन सेंटर स्थापित किया जाएगा

भुवनेश्वर १२/०१ (संवाददाता): शहर में जल्द ही एक ग्लोबल वीज़ा एप्लीकेशन सेंटर होगा, जिससे इंटरनेशनल वीज़ा चाहने वाले लोगों को काफी सुविधा मिलेगी। ओडिशा के मुज्यमंत्री मोहन चरण माझी ने राज्य की राजधानी में यह सुविधा स्थापित करने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। प्रस्तावित वीज़ा सेंटर भुवनेश्वर के बारामुंडा में बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर बस टर्मिनल बिल्डिंग से काम करेगा। ओडिशा सरकार सेंटर के लिए लगभग 3,000 वर्ग फुट ज़मीन देगी। फिलहाल, ओडिशा के निवासियों को विदेश यात्रा के लिए वीज़ा से जुड़े काम पूरे करने के लिए कोलकाता, दिल्ली या हैदराबाद जाना पड़ता है। इस मांग को देखते हुए मुज्यमंत्री ने प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है।

एबुलेंस और एसयूवी की टक्कर में एक की मौत, दो गंभीर रूप से घायल

ओडिशा १२/०१ (संवाददाता): गंजाम जिले के कपामंडी के पास दिगापहांडी-डेंगाउष्टा मुज्य सड़क पर एक स्क्रू और एक प्राइवेट एज्बुलेंस की आमने-सामने टक्कर में एक व्यक्ति की मौत हो गई और दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। बताया जा रहा है कि यह हादसा सुबह करीब 3 बजे हुआ, जब एक बोलेरो गाड़ी गजपति पात्रा से आ रही एक प्राइवेट एज्बुलेंस से टकरा गई। मृतक की पहचान रायगड़ा जिले के काशीपुर की रहने वाली ललिता नायक के रूप में हुई है। पुलिस ने ड्राइवर को पकड़ा रिपोर्ट्स के मुताबिक, ललिता इलाज के बाद अपनी बहन और भतीजे के साथ कटक मेडिकल से घर लौट रही थी। रास्ते में उनकी बोलेरो का यह जानलेवा हादसा हो गया। ललिता की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि उसकी बहन और भतीजे को गंभीर चोटें आईं।

घायलों को दिगापहांडी अस्पताल ले जाया गया घायलों को तुरंत दिगापहांडी अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉज्टरों ने उनकी हालत गंभीर बताई। बाद में उन्हें बेहतर इलाज के लिए बेरहामपुर रेफर कर दिया गया। इस बीच, दिगापहांडी पुलिस घटना के तुरंत बाद दुर्घटनास्थल पर पहुंची और जांच शुरू की। शव को बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है। पुलिस दुर्घटना के कारणों का पता लगाने के लिए इलाके के ष्टष्टज्ञङ्क फुटेज की भी जांच कर रही है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद और जानकारी मिलने की उम्मीद है।

नवीन का सैलरी हाइक ठुकराना सिर्फ एक राजनीतिक हथकंडा है-बीजेपी और कांग्रेस

भुवनेश्वर १२/०१ (संवाददाता): विपक्ष के नेता और ब्क्छष्ठ अध्यक्ष नवीन पटनायक के विधायकों के लिए मंजूर बढ़ी हुई सैलरी और सुविधाओं को छोड़ने और मुज्यमंत्री मोहन चरण माझी से इसे गरीबों के कल्याण के लिए इस्तेमाल करने के अनुरोध पर ब्क्छक्क और कांग्रेस ने कड़ी आलोचना की है। सज़ाधारी और विपक्षी दोनों पार्टियों ने नवीन के फैसले को एक दिखावा बताया, जो ब्क्छष्ठ के दोहरे मापदंडों को दिखाता है। ब्क्छष्ठ विधानसभा में विधायकों द्वारा सर्वसज्मति से लिए गए फैसले का हिस्सा थी और अब नवीन का बढ़ोतरी को स्वीकार करने से इनकार करना सिर्फ़ एक राजनीतिक दिखावा है, उन्होंने कहा। उपमुज्यमंत्री कनक वर्धन सिंह देव ने कहा कि विपक्ष के नेता के तौर पर, नवीन बिल पेश होने पर सदन में इसका विरोध कर सकते थे। उन्होंने न तो चर्चा में हिस्सा लिया और न ही विधानसभा में इस मुद्दे पर बहस के दौरान कोई आपज़ि जताई।

जब उनकी पार्टी ने बिल को पूरा समर्थन दिया, तो आप नवीन के फैसले को ज्या कहेंगे? सिंह देव ने सवाल किया। संबलपुर के विधायक और वरिष्ठ ब्क्छक्कनेता जयनारायण मिश्रा ने कहा कि पूर्व मुज्यमंत्री को अपने पिता का अनुसरण करते हुए अपनी पूरी सैलरी छोड़ देनी चाहिए थी ।बीजू बाबू सिर्फ़ एक रुपया सैलरी लेते थे। नवीन बाबू उनके उदाहरण का पालन कर सकते थे और इस सिद्धांत को ब्क्छष्ठ के सभी सदस्यों पर लागू कर सकते थे। यह सिर्फ़ ड्रामा है। लेकिन कोई इस पर विश्वास नहीं कर रहा है, मिश्रा ने टिप्पणी करते हुए कहा कि विपक्ष के नेता बहुत अमीर आदमी हैं और उन्हें सैलरी की ज़रूरत नहीं है।

मिश्रा ने कहा कि अगर नवीन ने शीतकालीन सत्र के आखिरी दिन भी बिल का विरोध किया होता, तो सरकार इसे वापस ले लेती। ब्क्छष्ठ की मुज्य सचेतक प्रमिला मल्लिक सैलरी बढ़ोतरी की मांग कर रही थीं। ज्या उन्होंने नवीन बाबू की सहमति या मंजूरी के बिना ऐसा किया होगा? मिश्रा ने पूछा। इसी तरह के विचार व्यक्त करते हुए, कांग्रेस विधायक पवित्र साउंता ने बढ़ी हुई सैलरी को स्वीकार करने से नवीन के इनकार को एक राजनीतिक स्टंट बताया। हालांकि, कांग्रेस विधायक ने तर्क दिया कि पूर्व और वर्तमान विधायकों के लिए सैलरी बढ़ोतरी बहुत ज़रूरी थी जो विज़ीय कठिनाइयों का सामना कर रहे हैं। आलोचना का जवाब देते हुए, ब्क्छष्ठ विधायक गणेश्वर बेहरा ने स्पष्ट किया कि नवीन ने पार्टी विधायकों को अपनी सैलरी छोड़ने का कोई निर्देश नहीं दिया था।

आरएसपी की क्वालिटी सर्कल टीमें प्रतिष्ठित समेलनों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए समानित

राउरकेला १२/०१ (संवाददाता): राउरकेला इस्पात संयंत्र (आरएसपी) की सेज्टी सर्कल टीमों को अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय सज्मेलनों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए आरएसपी के निदेशक प्रभारी, श्री आलोक वर्मा द्वारा सज्मानित किया गया। यह कार्यक्रम मंथन सज्मलेन कक्ष में आयोजित किया गया था। इस अवसर पर कार्यपालक निदेशक (खान विकास एवं सीएमएलओ), श्री बी के गिरि, कार्यपालक निदेशक (वर्क्स), श्री विश्व रंजन पलाई, कार्यपालक निदेशक (सामग्री प्रबंधन), श्री अनिल कुमार, कार्यपालक निदेशक (खान, ओजीओएम, सीएमएलओ), श्री एम. पी. सिंह, मुज्य महाप्रबंधक प्रभारी (विज), श्री राजेश दासगुप्ता एवं कई मुज्य महाप्रबंधक और विभागाध्यक्ष उपस्थित थे। ज्लास्ट फर्नेस-5 की उत्कर्ष सेज्टी सर्कल टीम को दुबई में आयोजित गुणवज्ञा अवधारणाओं पर अंतर्राष्ट्रीय सज्मेलन (आईसीज्यूसी) 2025 में उत्कृष्ट पुरस्कार हासिल करने के लिए सज्मानित किया गया। पुरस्कार विजेता टीम में इंजीनियरिंग एसोसिएट और टीम लीडर, श्री संतोष कुमार रे, जूनियर इंजीनियरिंग एसोसिएट और उप लीडर, श्री सुशांत स्वैन, इंजीनियरिंग एसोसिएट, श्री दीपक दास और श्री सरोजा नायक शामिल थे। उप प्रबंधक (बीएफ-5), श्री विक्रम झा इस समूह के फैसिलिटेटर थे, जिन्होंने मुज्य महाप्रबंधक (ज्लास्ट फर्नेस), श्री सुमीत कुमार के मार्गदर्शन में काम किया।

टीम ने बीएफ-5 के यू-सील क्षेत्र में कई नवीन और प्रभावशाली सुरक्षा सुधारों को लागू करने के लिए यह पहचान हासिल की। इस मौके पर जिस दूसरी टीम को सज्मानित किया गया, वह कोल केमिकल डिपार्टमेंट (सीसीडी) की प्रयोग सेज्टी सर्कल टीम थी, जिसने 19 से 22 दिसंबर 2025 तक नई दिल्ली में हुए गुणवज्ञा अवधारणाओं पर राष्ट्रीय सज्मेलन (एनसी ज्यूसी)-2025 में पार एज्सीलेंस गोल्ड अवार्ड जीता है। टीम को अमोनियम सल्फेट प्लांट के कोक ओवन गैस सील पॉट क्षेत्र में कई अभिनव और असरदार सुरक्षा उपायों को सफलतापूर्वक लागू करने के लिए सज्मानित किया गया। टीम के सदस्य श्री सस्वत कुमार साहू (जूनियर इंजीनियरिंग एसोसिएट), श्री सत्यजीत हेज्ब्रम (इंजीनियरिंग एसोसिएट), श्री श्याम सुंदर हांसदा (इंजीनियरिंग एसोसिएट), श्री अभिजीत प्रजापति (जूनियर इंजीनियरिंग एसोसिएट), और श्री मनोज मोहंती (कॉन्ट्रैक्टुअल सुपरवाइजर, मेसर्स एस. के. सिंह कंस्ट्रज्शंस) थे। वरिष्ठ प्रबंधक (परिचालन-सीसीडी), श्री अनिरुद्ध हिकोका इस समूह के फैसिलिटेटर थे। महाप्रबंधक (सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग), और सेज्टी सर्कल्स के समन्वयक, श्री अबकास बेहेरा ने दोनों टीमों के सुरक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।